thearyasamaj.org

ओ३म्


परोपकारिणी

पाक्षिक

# परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ६ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च ( द्वितीय ) २०१५

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

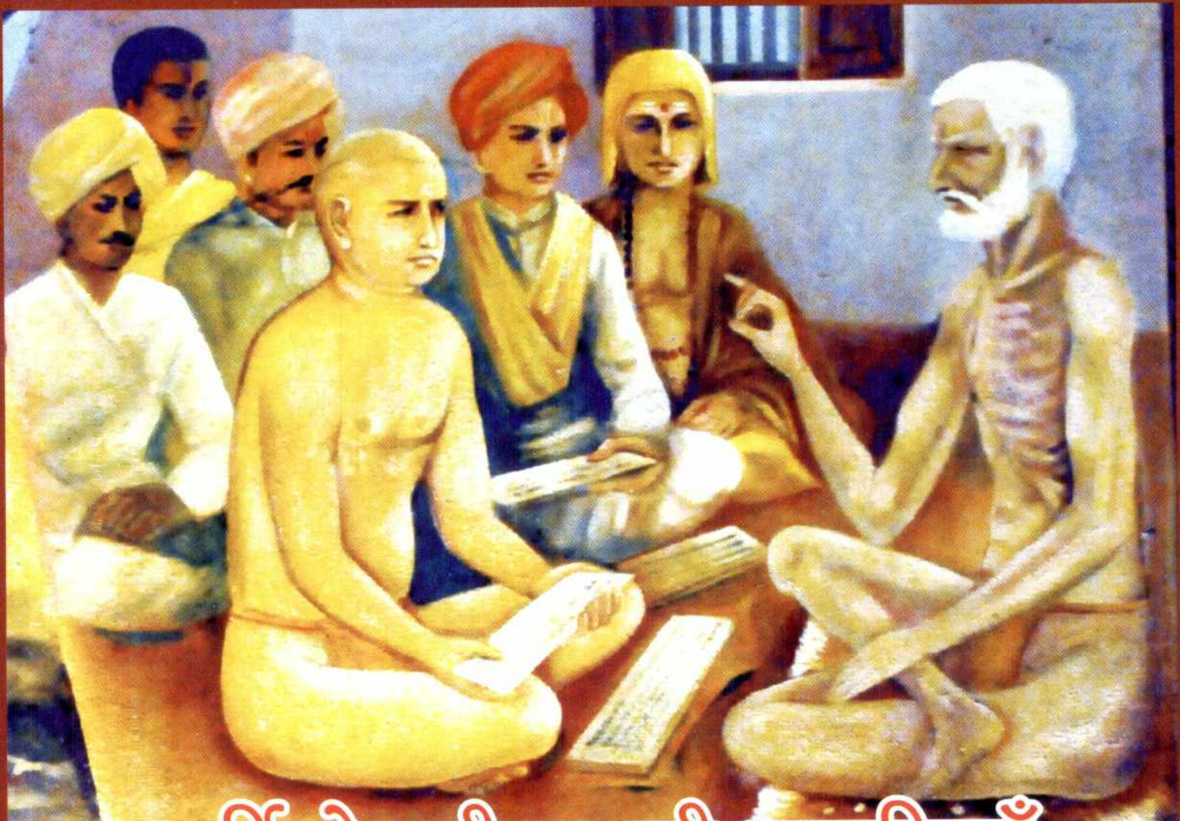

# महर्षि के जीवन की झलकियाँ

thearyasamaj.org

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र**

**वर्ष** : ५७ **अंक** : ६
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

**सम्पादक**
प्रो. धर्मवीर

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**-परोपकारी का शुल्क-**
**भारत में**
**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

**विदेश में**
**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

**वैदिक पुस्तकालय** : ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान** : ०१४५-२६२१२७०

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।*
*संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

ओ३म्

RNI. No. ३९५९ / ५९

# परोपकारी

## मार्च द्वितीय २०१५

### अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. राष्ट्रीय पुस्तक क्या हो? | सम्पादकीय | ०४ |
| २. अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्य..... | स्वामी विष्वङ् | ०७ |
| ३. कुछ तड़प-कुछ झड़प | राजेन्द्र जिज्ञासु | १४ |
| ४. दक्षिण भारत में आर्यसमाज का.... | डॉ. ब्रह्ममुनि | २० |
| ५. अण्डमान प्रचार यात्रा | प्रभाकर आर्य | २४ |
| ६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन | | २७ |
| ७. ऊमर काव्य | ऊमरदान लालस | २९ |
| ८. जिज्ञासा समाधान-८३ | आचार्य सोमदेव | ३३ |
| ९. पुस्तक-समीक्षा | देवमुनि | ३७ |
| १०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-५ | | ३८ |
| ११. संस्था-समाचार | | ३९ |
| १२. आर्यजगत् के समाचार | | ४२ |


*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
**- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -**
**www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan**

thearyasamaj.org



# राष्ट्रीय पुस्तक क्या हो?

समय-समय पर भारतीय गौरव की चर्चा में इस देश के साहित्य की भी चर्चा होती है। अंग्रेजों ने देश को दास बनाने के लिए यहाँ के गौरव को नष्ट किया है, ऐसे समय में किसी गौरव पूर्ण बात की चर्चा अच्छी लगती है। प्रधानमन्त्री मोदी ने जापान जाकर वहाँ के प्रधानमन्त्री को गीता की पुस्तक भेंट की तो गीता पर फिर से चर्चा चलने लगी। लोगों ने गीता के महत्त्व को रेखांकित करने के लिए गीता को राष्ट्र ग्रन्थ घोषित करने की माँग कर दी, विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज ने अपने कार्यक्रम में कह दिया, सरकार तो गीता को राष्ट्र ग्रन्थ मानती है, बस केवल घोषणा करनी शेष है? विदेश मन्त्री के कथन से तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोगों के पेट में दर्द होना स्वाभाविक था। गीता का विरोध प्रारम्भ हो गया। कहा जाने लगा यह देश विभिन्न धर्मों का देश है, किसी एक धर्म पुस्तक को राष्ट्र ग्रन्थ घोषित नहीं किया जा सकता, इस वाद-विवाद में राष्ट्र ग्रन्थ घोषित करने की बात दब गई।

हमारे देश में किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी को महत्त्व देने के लिए व्यक्ति, वस्तु आदि को राष्ट्रीय गौरव प्रदान करके राष्ट्र पण्डित, राष्ट्र कवि, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय चिह्न आदि घोषित करते हैं। इस प्रकार देशवासियों के मन में इन का सम्मान बढ़ाते हैं, उनका संरक्षण और प्रचार-प्रसार भी कर देते हैं। इसी क्रम में गीता को राष्ट्र ग्रन्थ बनाने की माँग उठती है। प्रथम तो यह बात ध्यान देने योग्य है कि गीता को धर्म पुस्तक का स्थान दिया गया है। न्यायालय में गीता पर हाथ रखकर शपथ दिलाई जाती है। इसी प्रकार कुरान और बाईबिल की पुस्तक पर हाथ रखकर भी शपथ दिलाई जाती है, शपथ लेने के लिए व्यक्तिगत विश्वास को काम में लिया जाता है। जो लोग नानाधर्मी का देश बताकर गीता का विरोध करते हैं, वे या तो पक्षपाती हैं, उनमें स्वाधीनता और दासता का बोध नहीं है। देश में क्या कुरान को धर्म ग्रन्थ बनाया जा सकता है? हाँ, बनाया जा सकता है जिस दिन इस देश की सत्ता इस्लाम स्वीकार कर ले। यही परिस्थिति बाईबिल की भी हो सकती है। यदि कभी ऐसा हो भी जाये तो क्या इससे इस देश का गौरव बढ़ेगा? गौरव तो नहीं बढ़ेगा किन्तु दासता का इतिहास बढ़ेगा। यदि यह देश ईसाई बहुल बन जाय तो निश्चित रूप से यहाँ का धर्म ग्रन्थ बाईबिल हो जायेगा। अमेरिका में सभी को अपना धर्म ग्रन्थ मानने की स्वतन्त्रता है परन्तु बाईबिल सर्वोपरि है।

धर्मग्रन्थ को राष्ट्रीय महत्त्व देने के पीछे देश के गौरव को प्रदर्शित करने का विचार रहता है। गीता इस देश के इतिहास और परम्परा के प्रतीक के रूप में स्वीकार की जाती है। इसका कर्म करने, फल में आसक्त न होने का विचार किसी भी बुद्धिमान् व्यक्ति को आकर्षित कर सकता है, वर्तमान में देशी-विदेशी विद्वानों में इसके प्रति रुचि रही है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नायक लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य लिखकर गीता को समाज का मार्गदर्शक बनाया। महात्मा गाँधी ने भी उसे अपनी प्रेरणा का स्रोत बताया। विदेशी विद्वानों में प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन को गीता का प्रेमी बताया जाता है, ऐसे में गीता की बात को साम्प्रदायिकता से या धर्म निरपेक्षता से जोड़कर देखना दास मानसिकता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। यह विरोध प्रथम तो हिन्दू विरोध को प्रगतिशीलता मानने वालों की मानसिकता है, दूसरा विरोध का कारण अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की प्रवृत्ति है। ये दोनों ही बातें बुद्धि और औचित्य से रहित हैं, अत: निन्दनीय हैं।

यही एक और बात पर भी विचार करना उचित होगा क्या गीता भारतीय ज्ञान परम्परा का सर्वोत्कृष्ट और सर्वोच्च ग्रन्थ है? क्या कोई और भी ग्रन्थ हैं। इस पर विचार करते हुए विचारणीय प्रश्नों में पहला प्रश्न है- क्या गीता कोई ग्रन्थ है? क्या गीता श्री कृष्ण की रचना है? पहली बात गीता कोई स्वन्तत्र ग्रन्थ नहीं है। गीता महाभारत के एक छोटे से भाग का नाम है। महाभारत में अनेक गीता विद्यमान हैं, हिन्दू समाज में कृष्णार्जुन संवाद को प्रमुख स्थान मिला है, अत: समाज में इसका प्रचार-प्रसार बहुत हुआ। वर्तमान में गीता प्रेस जैसे संस्थान में गीता के प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान दिया है। पठन-पाठन की परम्परा में भी इसे पाठ्यक्रम में स्थान मिला। हिन्दी में रामचरित मानस जैसे ग्रन्थ धर्मग्रन्थ के रूप में प्रचलित हैं, उसी प्रकार उससे पूर्व से गीता का हिन्दू समाज में धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रचार-प्रसार चला आ रहा है। गीता के सम्बन्ध में जानने योग्य तथ्य है, गीता कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, न ही इसके रचयिता श्री कृष्ण, महाभारत काल में युद्ध समय दिये गये उपदेश को महाभारत की रचना करने वाले ने संकलित

thearyasamaj.org

कर दिया है। जिस प्रकार महाभारत में प्रक्षेप या मिलावट है उसी प्रकार उसी अनुपात में गीता में भी प्रक्षेप मिलावट है। गीता के श्लोकों की संख्या भी कम अधिक देखने में आती है। बाली द्वीप में प्राप्त गीता में केवल अस्सी श्लोक प्राप्त होते हैं जबकि वर्तमान गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित गीता में सात सौ श्लोक मिलते हैं। इनके भाष्यकार बहुत हुए और उन्होंने बहुत तरह से अर्थ किये हैं परन्तु गीता का महत्त्व पुरुषार्थ करने की प्रेरणा है। गीता को आज वेदान्त का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। वेदान्त पर व्याख्यान करने वाले, वेदान्त पढ़ने-पढ़ाने वाले, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता को मिलाकर प्रस्थानत्रयी कहते हैं और तीनों में वेदान्त की पूर्णता मानते हैं। वेदान्त के इन तीन ग्रन्थों में सबसे प्राचीन उपनिषद् है फिर इनके व्याख्यान रूप में ब्रह्मसूत्र है और उसके भी बाद गीता का स्थान आता है। जो लोग गीता का महत्त्व पढ़ते हैं, उनमें एक श्लोक पढ़ा जाता है- **सर्वोपनिषदः गावो**- जिसका अर्थ है- सब अर्थात् उपनिषद् गौवें हैं, श्री कृष्ण गोपाल है, अर्जुन वत्स अर्थात् बछड़ा है और उनका दूध गीतामृत है। इस क्रम में गीता का स्थान तीसरा, वेदान्त का मूल उपनिषद् है, ब्रह्मसूत्र गीता उसका व्याख्यान है। मूल से कभी व्याख्यान महत्त्वपूर्ण हो सकता है परन्तु यहाँ उपनिषदों का महत्त्व कम नहीं है, संस्कृत के पठन-पाठन की न्यूनता से उनका प्रचार-प्रसार गीता की अपेक्षा कम है। गीता में और उपनिषदों में एक समानता है, वह यह कि गीता भी स्वतन्त्र रचना नहीं है और सभी उपनिषद् भी स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में किसी के द्वारा नहीं लिखी गई हैं। वैसे आज उपनिषद् ग्रन्थों की संख्या सैकड़ों में हैं, परन्तु विद्वत् समाज में दस या ग्यारह उपनिषद् ही स्वीकार्य हैं और सभी ग्रन्थ ब्राह्मण, शाखा ग्रन्थ या वेद के भाग हैं। इनमें ईशोपनिषद् का सबसे अधिक महत्त्व है और वह इस कारण है कि उपनिषद् के दो मन्त्रों को छोड़ कर सभी मन्त्र यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मन्त्र हैं। इसप्रकार सारी उपनिषदें वैदिक साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में से आत्मा और परमात्मा को लेकर लिखी गई चर्चा को लेकर पृथक्-पृथक् पुस्तक के रूप दिया गया है। इस प्रकार उपनिषद्, वेदान्त शास्त्र की प्रामाणिक पुस्तकें हैं। स्वाध्यायशील लोग भली प्रकार जानते हैं कि उपनिषदों को वेदान्त नाम क्यों दिया गया है- वेदान्त शब्द का अर्थ होता है वेद का रहस्य, वेद का प्रयोजन, वेद का प्रयोजन जहाँ संसार में मनुष्य को किसप्रकार जीवनयापन करना चाहिए यह सिखाता है उसीप्रकार हमारे संसार में आने का और मनुष्य जीवन पाने का परम प्रयोजन आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार करना है। इस प्रयोजन का नाम ही वेदान्त है। इस प्रयोजन की सिद्धि के बिना- गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ या वेद का कोई महत्त्व नहीं रहता।

गीता की चर्चा करने वालों को ध्यान में रहना चाहिए गीता वेदान्त का ग्रन्थ है, वेदान्त ब्रह्मसूत्र का भी नाम है, ब्रह्मसूत्र उपनिषदों के सन्देह स्थलों की और कठिन शब्दों की व्याख्या करने वाली पुस्तक उपनिषदों के मूल ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, जिन ग्रन्थों को तीन भागों में बांटा गया है, सम्पूर्ण ग्रन्थ का नाम ब्राह्मण ग्रन्थ है, उसी के एक भाग को आरण्यक कहते हैं, इसी के एक भाग जिसमें आत्मा-परमात्मा की चर्चा है, उसे उपनिषद् नाम से सम्बोधित किया जाता है। जिन ब्राह्मण ग्रन्थों के भागों को उपनिषद् कहते हैं, उन ब्राह्मण ग्रन्थों को ब्राह्मण इसलिए कहते हैं क्योंकि ब्रह्म वेद को कहते हैं और वेद के व्याख्यान को ब्राह्मण कहते हैं। वेद के व्याख्यान होने के कारण इन्हीं को कहीं वेद भी कह दिया गया है। इस प्रकार गीता का मूल है वेदान्त, वेदान्त का मूल है उपनिषद् ग्रन्थ, उपनिषदों का मूल है ब्राह्मण ग्रन्थ और ब्राह्मण ग्रन्थों के मूल हैं चार वेद संहिता। इतने लम्बे-चौड़े वैदिक साहित्य में गीता का स्थान कहाँ आता है और इसका कितना महत्त्व है यह विचारशील लोगों के लिए समझना कठिन नहीं है।

हमारे गीता प्रेमी पौराणिक मित्रों का गीता प्रेम आत्मा-परमात्मा का दर्शन को लेकर नहीं है। पौराणिक मित्रों के गीता प्रेम का मुख्य कारण कृष्ण को अवतार और भगवान मानने के कारण है। यदि गीता के एक ही श्लोक को राष्ट्रीय वाक्य बताने के लिए कहा जाये तो वे **यदा यदा हि...** श्लोक को राष्ट्र का आदर्श वाक्य घोषित कर दें। इन मित्रों को गीता के पुरुषार्थ प्रेरणा से उतना प्रेम नहीं है जितना गीता विश्वदर्शन प्रकरण से है वे तो श्री कृष्ण के बाल मुख में विश्वदर्शन से गद्‌गद् रहते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्रधारी रूप उतना आकर्षित नहीं करता जितना राधा के साथ बांसुरी बजाने वाला रूप अपनी ओर खींचता है। इन मित्रों का मन्त्र है- राधे-राधे बोल, चले आयेंगे बिहारी। ऐसे प्रेमियों को **कर्मण्येव....** अधिकार की पंक्तियाँ कैसे आकर्षित कर सकती हैं। गीता सम्मेलनों में गीता पर माला चढ़ा कर, उसके सामने दीप जला कर अपनी श्रद्धा प्रकाशित करने वालों के मन में गीता को राष्ट्र ग्रन्थ बनाने की इच्छा है तो उसके श्री कृष्ण को भगवान

thearyasamaj.org

सिद्ध करने वाले प्रकरण से है। गीता की इन प्रक्षिप्त पंक्तियों को निकाल कर गीता को धर्म ग्रन्थ बनाने की चर्चा की जाये तो सम्भवत: उन्हें रुचिकर न लगे। गीता में स्त्रियों को, वैश्यों को अन्त्य=निम्न योनियों में गिनने वाली पंक्तियाँ भी गीता पंक्तियाँ ही लगेंगी या तुलसी की ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी की ग्राह्य व्याख्या करने के प्रयत्न यहाँ भी व्याख्या में लगा लेंगे।

गीता की प्रशंसा और उपयोगिता में कोई बात है तो वह है जिस अर्जुन ने शस्त्र छोड़कर युद्ध करने से इन्कार कर दिया था। ऐसे अर्जुन को पुन: युद्ध के लिये तैयार कर दिया था। गीता के प्रारम्भ के छ: अध्याय और अन्त के छ: अध्यायों में उपदेश और दर्शन की बातें कहीं गई हैं, परन्तु मध्य में अवतारवाद और व्यर्थ की बातों की भरमार है। गीता जिस प्रकार वेदान्त की व्याख्या उसके अनुसार गीता का मूल स्वर है बिना किसी भय और पक्षपात के अपने कर्त्तव्य का पालन करना। मनुष्य जीवन समाप्ति के भय से, संघर्ष करने से पीछे हट जाता है तथा पक्षपात के भाव से कर्त्तव्य की उपेक्षा करता है। श्री कृष्ण ने गीता में- **न योत्स्य- मैं नहीं लड़ूँगा,** कहने वाले अर्जुन को- **करिष्ये वचनन्तव-** जो भी तु कहेगा वह सब करने के लिए तैयार हूँ- यहाँ तक पहुँचा दिया यही और इतनी ही गीता है। गीता के सात सौ श्लोक यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मात्र दूसरे मन्त्र की व्याख्या है। इस मन्त्र में कहा गया है, मनुष्य को इस संसार में आकर सदा कर्म करते हुए ही जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस कर्म करने की शर्त है कर्म करना है परन्तु उसके बन्धन में नहीं पड़ना है, बन्धन का कारण है- फल की इच्छा करना। इच्छा ही बन्धन का मूल है। यदि इच्छा रहित कर्म किया जाय तो बन्धन से मनुष्य बच सकता है इसे ही शास्त्र की भाषा में कर्त्तव्य कहा गया है। कर्त्तव्य करने में भय और पक्षपात नहीं होते, इसे ही गीता की भाषा में अनासक्त कर्म कहा है, आसक्ति का अर्थ है फंसना, न फंसना है अनासक्ति, यही वेद कहता है जिसकी व्याख्या गीता में भी है, अब आपको सोचना है आपका राष्ट्र ग्रन्थ क्या हो? वेद का मन्त्र है-

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।**
**एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।**

**- धर्मवीर**

---

**परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में**

# प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

**दिनांक :** १७ मई २०१५ रविवार से २४ मई २०१५ रविवार तक

**स्थान :** ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

**सम्पर्क सूत्र :** ०९००१४३४४८४

---

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८**

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिससे वे गुणवान् हों।

**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९**

thearyasamaj.org


# अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या-५

- स्वामी विष्वङ्

**पिछले अंक का शेष भाग.....**

इस सम्बन्ध में महर्षि मनु महाराज कहते हैं-

**सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।**
**योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः।।**

-मनुस्मृति ५.१०६

अर्थात् संसार में बहुत प्रकार की शुद्धियाँ हैं परन्तु उन सभी प्रकार की शुद्धियों में से धन-सम्पत्ति की शुद्धि सबसे बड़ी शुद्धि है। जो-जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध हैं, वही-वही शुद्ध कहलाता है। बाकी मिट्टी से, जल से जो शुद्ध होने का दिखावा करते हैं, वह केवल दिखावा मात्र है। यथार्थता में अन्दर की पवित्रता से ही बाहर की वस्तुएँ पवित्र होती हैं, अन्यथा नहीं। यहाँ पर महर्षि मनु ने धनार्जन पर विशेष ध्यान दिया है। आजकल मनुष्य धनार्जन जिस किसी भी रीति से प्राप्त करने में जुटे हुए हैं अर्थात् धन पाने के लिए कैसी भी हिंसा कर सकते हैं। चाहे मनुष्य की चाहे पशु-पक्षियों की। धन के लालच से पूरे देश को डुबो सकते हैं। धन पाने के लिए किसी भी प्रकार का झूठ बोल सकते हैं। धनार्जन के लिए किसी भी प्रकार की चोरी कर सकते हैं। धन के लिए व्यभिचार कर सकते हैं। धन को बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के पदार्थों का संग्रह कर सकते हैं। धन प्राप्त करने के लिए मन को अत्यन्त मलिन कर सकते हैं। अधिक से अधिक धन बनाने के लिए जीवन को असन्तोष में ढ़केलते हैं। धन के लिए तप का त्याग कर देते हैं और स्वाध्याय करना बन्द कर देते हैं। केवल धन के पीछे चलने वाले व्यक्ति ईश्वर आज्ञा का पालन कभी नहीं कर सकते। इस प्रकार यम और नियम का उल्लंघन करते हुए धनार्जन किया जाता है, तो ऐसे धन को अशुद्ध कहते हैं। इसलिए महर्षि वेदव्यास ने अनर्थ को अर्थ मानने वालों को अविद्या ग्रस्त माना है। इसीप्रकार अर्थ शब्द से और भी अभिप्राय ले सकते हैं- जैसे भोजन आदि पदार्थ, वेदाज्ञा से विरुद्ध भोजन अपने आप में शुद्ध होने पर भी अशुद्ध माना जाता है। इसप्रकार अनेक उदाहरण हो सकते हैं।

**'तथा दुःखे सुखख्यातिं वक्ष्यति- ''परिणामताप-संस्कार दुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः''** (योग. २.१५) इति। **तत्र सुखख्यातिरविद्या'**

अर्थात् उसीप्रकार दुःख में सुख बुद्धि रखना अविद्या है, इस बात को लेकर स्वयं सूत्रकार महर्षि पतञ्जलि आगे इसी साधन पाद के पन्द्रहवें सूत्र में वर्णन करेंगे। मनुष्य के सुख में, शान्ति में, तृप्ति में, निर्भयता में और स्वतन्त्रता में दुःख अत्यन्त बाधक है। यदि जीवन में दुःख है तो न सुख, न शान्ति, न तृप्ति, न निर्भयता और न ही स्वतन्त्रता रहेगी। इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने दुःख को अलग से परिभाषित करने के लिए अलग सूत्र बनाया और महर्षि वेदव्यास ने उस सूत्र की विस्तृत व्याख्या की है। उसकी व्याख्या उसी सूत्र पर देखलेंगे इसलिए यहाँ पर उसकी चर्चा नहीं करते हैं।

महर्षि वेदव्यास अविद्या के चौथे भाग की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-

**तथानात्मन्यात्मख्यातिर्बाह्योपकरणेषु चेतनाचेतनेषु भोगाधिष्ठाने वा शरीरे, पुरुषोपकरणे वा मनस्यनात्मन्यात्मख्यातिरिति।**

अर्थात् जो अनात्मा= जड़ पदार्थ में आत्म=चेतन बुद्धि रखना अविद्या है। मनुष्य जड़ वस्तु को चेतन वस्तु मानकर व्यवहार करता है। यह बहुत बड़ी अविद्या है। मनुष्य के प्रयोजन को पूर्ण करने के लिए बहुत कुछ साधनों की अपेक्षा रहती है। मनुष्य अपने से अलग बाहर के साधनों का प्रयोग करता है उन बाहर के साधनों को महर्षि ने **बाह्य-उपकरण** शब्द से कथन किया है। बाह्य-उपकरण दो प्रकार के हैं- चेतन के रूप में और जड़ के रूप में। यहाँ जो साधन जड़ के रूप में हैं वे- धन, भूमि, मकान, गाड़ी आदि हैं और जो साधन चेतन के रूप में हैं वे- माता, पिता, पति, पत्नी, भाई, बहन, सम्बन्धी, समाजी, देशवासी, विश्ववासी मनुष्य और इनके अतिरिक्त मनुष्येतर प्राणी- पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि। ये सब (अर्थात् चेतन और अचेतन) मनुष्य के प्रयोजन को सिद्ध करने वाले हैं। उनके बिना मनुष्य का प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए महर्षि ने उन्हें बाह्य-उपकरण कहा

thearyasamaj.org

है। यहाँ पर बाह्य-उपकरण जड़ भी हैं और चेतन भी हैं। जड़ को चेतन माना जा रहा है अर्थात् धन, भूमि, मकान, गाड़ी आदि को मनुष्य चेतन मानकर दु:खी होता रहता है। यद्यपि शब्दों से मनुष्य को समझ में नहीं आता कि 'मैं धन को कैसे चेतन मानता हूँ, मैं तो धन को जड़ ही मानता हूँ इत्यादि।' परन्तु व्यवहार करते समय व्यक्ति धन को चेतन ही मानता हुआ दु:खी होता है। इसका उदाहरण महर्षि स्वयं आगे की व्याख्या में करेंगे।

बाह्य-उपकरण में जड़ वस्तुओं को चेतन मानना तो अविद्या है परन्तु महर्षि ने चेतन को भी बाह्य-उपकरण माना है। फिर चेतन को चेतन मानने में अविद्या कैसे हो सकती है? इसका समाधान है कि यहाँ पर चेतन शब्द का प्रयोग आत्मा के लिए नहीं आया बल्कि चेतन शब्द शरीर के लिए आया है। इसलिए यहाँ पर शरीरों को ही लेना चाहिए। मनुष्य शरीर को भी चेतन मानता है। इस कारण यह अविद्या है न कि चेतन को चेतन मानना अविद्या है। मनुष्य जहाँ अन्य लोगों के शरीरों को चेतन मान लेता है वहाँ स्वयं के शरीर को भी चेतन मानता है। इसलिए महर्षि ने कहा- **'भोगाधिष्ठाने वा शरीरे'** अर्थात् मनुष्य जो भी रूप, रस, गन्ध, स्पर्श व शब्द वाले पदार्थों का भोग (=सुख रूप में या दु:ख रूप में) करता है, वह भोग जिस आश्रय से करता है उसे शरीर कहते हैं। ऐसे साधन रूप (स्वयं के) शरीर को चेतन मानता है। शरीर जड़ है फिर भी मनुष्य अपने शरीर को चेतन मानकर व्यवहार करता है। इसे अविद्या ही कहा जाता है। महर्षि ने जहाँ बाह्य-उपकरणों को लेकर कहा है वहाँ आन्तरिक उपकरण के सन्दर्भ में भी कहा है कि-

**पुरुषोपकरणे वा मनस्यनात्मन्यात्मख्यातिरिति।**

अर्थात् आत्मा का अत्यन्त निकट उपकरण=साधन मन को आत्मा समझना अविद्या है। मनुष्य मन को ही आत्मा समझ कर सम्पूर्ण व्यवहार करता है। यह बोलता हुआ देखा जाता है कि मेरा मन ऐसा करता है, मेरा मन नहीं मानता, मेरा मन चला गया इत्यादि। यद्यपि मनुष्य शब्दों से मन को स्थूल बुद्धि से जड़ तो मानता है परन्तु आन्तरिक सूक्ष्म बुद्धि से मन को चेतन ही मानता है। मनुष्य जब तक समाधि लगा कर अनुभव नहीं करता तब तक सूक्ष्मता से मन को चेतन मानता है। हाँ, यह अलग बात है कि वाणी से नहीं बोलता, परन्तु उसका व्यवहार चेतन मान कर ही होता रहता है।

मनुष्य जड़ वस्तु (= धन, भूमि, मकान, गाड़ी आदि) को चेतन कैसे मानता है- कौन भला धन को या भूमि को या मकान को चेतन मानेगा? यह कैसे हो सकता है? हाँ, हो सकता है इसीकारण महर्षि ने कहा जड़ को चेतन मानता है। कैसे?

**तथैतदत्रोक्तम् व्यक्तमव्यक्तं वा सत्त्वमात्मत्वेनाभिप्रतीत्य तस्य सम्पदमनुनन्दत्यात्मसम्पदं मन्वानस्तस्य व्यापद-मनुशोचत्यात्मव्यापदं मन्वानः स सर्वोऽप्रतिबुद्ध इति।**

अर्थात् इस अविद्या के चौथे प्रकार को जो कि जड़ को चेतन किसप्रकार माना जाता है इस सम्बन्ध में अन्य ऋषि कहते हैं कि व्यक्त (जिन में चेतन आत्मा रहता है वह शरीर) चेतन पदार्थ- जैसे- पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी आदि और पशु, पक्षी आदि अन्य प्राणि। अव्यक्त (धन, भूमि, मकान, गाड़ी आदि) पदार्थ को आत्मा मानकर उन चेतन अचेतन रूप जड़ पदार्थों की समृद्धि-उन्नति-बढ़ोत्तरी को देखकर अपनी समृद्धि-बढ़ोत्तरी मानता हुआ व्यक्ति अति प्रसन्न होता रहता है। उसीप्रकार उन जड़ चेतन पदार्थों की विपत्ति-हानि-ह्रास-न्यूनता-विनाश को देखकर अपनी विपत्ति-हानि-ह्रास-विनाश मानता हुआ शोकग्रस्त होता है- दु:खी होता है। इसप्रकार मानने वाले वे सभी मनुष्य नितान्त अज्ञानी-मूर्ख हैं, ऐसा समझना चाहिए। यह अविद्या की पराकाष्ठा का उदाहरण है।

यहाँ पर धन, भूमि आदि की वृद्धि होने पर मनुष्य यह मानता और बोलता भी है कि 'मैं बढ़ रहा हूँ, मैं उन्नत हो रहा हूँ, मेरी बढ़ोत्तरी हो रही है इत्यादि।' यहाँ मैं से आत्मा लिया जाता है। व्यक्ति आत्मा में वृद्धि मानता है। जबकि आत्मा नित्य पदार्थ है जिस रूप में है उसी रूप में सदा रहेगा। नित्य पदार्थ में न वृद्धि होती है, न न्यूनता आती है, फिर यह कैसे स्वीकार किया जा रहा है कि 'मैं बढ़ रहा हूँ' इत्यादि। इसीप्रकार पुत्र व पुत्री के शरीरों में वृद्धि होने पर माता-पिता यह मानते हैं कि 'हम बढ़ रहे हैं, हमारे अंश बढ़ रहे हैं या हम ही बढ़ रहे हैं इत्यादि।' जिसप्रकार जड़ व चेतन पदार्थों की वृद्धि से आत्मा की वृद्धि स्वीकार किया जा रहा है उसी प्रकार जड़ पदार्थों में न्यूनता-कमी या विनाश होने पर व्यक्ति अपनी न्यूनता-कमी या विनाश मानता है। उदाहरण के लिए धन कम हो जाये या डूब जाये अथवा कोई हड़प लेवें, तो

thearyasamaj.org

मनुष्य यह कहता है कि 'हाय! मैं डूब गया, मैं कम हो गया, मैं लुट-पिट गया, मेरा नाश हो गया इत्यादि।' यदि पुत्र व पुत्री में न्यूनता आ जाये तो माता-पिता अपनी न्यूनता-कमी मानते हैं। अपना अंश कम हो गया, ऐसा मानते हैं और यदि कोई अपना मृत्यु को प्राप्त हो जाये, तो और अधिक अपना नाश-अपनी हानि समझ कर अत्यन्त दुःखी होते हैं। यहाँ पर वे आत्मा का नाश अनुभव करते हैं। यह इस बात का द्योतक है कि वे जड़ को चेतन मान कर व्यवहार में अत्यन्त दुःखी होते हैं। इसलिए यह अविद्या है।

महर्षि वेदव्यास उपसंहार करते हुए लिखते हैं-

**एषा चतुष्पदा भवत्यविद्या मूलमस्य क्लेशसन्तानस्य कर्माशयस्य च सविपाकस्येति।**

अर्थात् यह अविद्या चार विभागों वाली है, इसके साथ-साथ यह अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश नाम वाले क्लेशों का मूल कारण है। इतना ही नहीं आत्मा को सुख और दुःख रूप फलों को देने वाले कर्म समुदाय का भी कारण है। यहाँ पर मूल का अभिप्राय है बीज। बीज से ही उस जैसी सन्तान उत्पन्न होती है। इसकारण अस्मिता आदि उसकी सन्तान होने के कारण क्लेशों में अविद्यापन विद्यमान रहता है। कर्माशय भी तब बनता है जब क्लेश विद्यमान हो। इसलिए यहाँ महर्षि ने अविद्या को कर्मसमुदाय का कारण भी बताया है।

अभी तक जिस अविद्या को लेकर जो चर्चा की गई है क्या वह अविद्या सत्तात्मक है या विद्या का अभाव मात्र है? कभी कोई ऐसा न समझ बैठे कि अविद्या का अभिप्राय विद्या का अभाव मात्र है। ऐसा बिल्कुल नहीं है फिर क्या है? यहाँ अविद्या का अभिप्राय सत्तात्मक विरोधी ज्ञान (मिथ्या ज्ञान) है जिसको अविद्या शब्द से कथन किया जाता है। इसी बात को लेकर महर्षि वेदव्यास स्पष्ट करते हैं-

**तस्याश्चामित्रागोष्पदवद्वस्तुसतत्त्वं विज्ञेयम्।**

अर्थात् उस अविद्या को 'अमित्र' और 'अगोष्पद' शब्दों के अर्थों के समान वास्तविक-यथार्थ भावात्मक सत्ता है, ऐसा समझना चाहिए। अमित्र और अगोष्पद शब्दों का अर्थ स्वयं ऋषि आगे लिखते हैं। परन्तु यहाँ पहले 'अविद्या' शब्द में जो समास है उस पर विचार करते हैं। अविद्या शब्द में 'नञ्' तत्पुरुष समास है **न विद्या अविद्या इति।** जो विद्या नहीं है अर्थात् विद्या से विरोधी अविद्या है जिसे मिथ्याज्ञान-विपरीतज्ञान-उल्टाज्ञान शब्दों से कहा जाता है। महर्षि अमित्र व अगोष्पद शब्दों के अर्थों को बताते हुए कहते हैं-

**यथा नामित्रो मित्राभावः न मित्रमात्रं किन्तु तद्विरुद्धः सपत्नः।**

अर्थात् जिसप्रकार से अमित्र शब्द का अर्थ मित्र का अभाव नहीं है और न तो मित्र ही है बल्कि उस मित्र का विरोधी भावात्मक-सत्तात्मक शत्रु है।

**यथा चागोष्पदं न गोष्पदाभावो न गोष्पदमात्रं किन्तु देश एव ताभ्यामन्यद्वस्त्वन्तरम्।**

अर्थात् जिसप्रकार अगोष्पद शब्द का अर्थ गाय के पैर का अभाव नहीं है और न तो गाय का पैर ही है किन्तु भावात्मक-सत्तात्मक एक देश विशेष है- स्थान विशेष है। गाय के पैर और उसके अभाव से भिन्न अलग वस्तु है। इसप्रकार अमित्र का अर्थ शत्रु और अगोष्पद का अर्थ स्थान विशेष है। यहाँ 'नञ्' समास से मित्र के विरोधी अर्थ और गाय के पैर से विरोधी अर्थ को बताना मुख्य था।

इसी प्रकार

**एवमविद्या न प्रमाणं न प्रमाणाभावः किन्तु विद्याविपरीतं ज्ञानान्तरमविद्येति।**

अर्थात् यह जो अविद्या नाम वाला क्लेश है वह न तो किसी भी प्रकार के प्रमाणों के अन्तर्गत आता है अर्थात् वह ज्ञान या विद्या है और न ही वह विज्ञान या विद्या का अभाव मात्र है। बल्कि वह विद्या का विरोधी भिन्न ज्ञान है जिसे मिथ्याज्ञान नाम से कथन किया जाता है। इसलिए कोई भी यहाँ अविद्या का अर्थ अभाव के रूप में न समझें। यहाँ पर एक और भी बात समझ लेना चाहिए कि जब अविद्या के चार भेदों का वर्णन किया जा रहा है और अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश का बीज बताया जा रहा है तब यह कैसे समझ सकते हैं कि अविद्या का अभिप्राय अभाव मात्र है। ऐसा बिल्कुल नहीं। फिर भी कोई समझ सकता हो, तो उसके लिए उपरोक्त समाधान है, ऐसा समझना चाहिए। ऋषियों का बहुत बड़ा उपकार हम सब पर रहता है कि वे अपनी ओर से किसी भी प्रकार की भ्रान्ति या संशय को अवसर नहीं देते हैं। फिर भी हम साधारण बुद्धि वाले भ्रम या संशय उत्पन्न करके ऋषियों पर दोष मढ़ते हैं। यह हम सब की उन्नति में बाधक है, ऐसा हमें समझना चाहिए।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

**दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५**

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

## प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org
में साथ। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

**-संयोजक**

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC - SBIN0007959**

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४**

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२**

thearyasamaj.org

## ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

**सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल**-psabhaa@gmail.com

## यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

**वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

# अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

**परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।**

## लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

**-संपादक**

thearyasamaj.org

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

यह लेख ऋषि बोध पर्व से पूर्व प्राप्त हो गया था। परन्तु अपरिहार्य कारणों से फरवरी के अंकों में नहीं दे सके। पाठकों के लाभार्थ अब प्रस्तुत है।

-सम्पादक

महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। महर्षि का बोध पर्व उससे भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। आज पूरे विश्व में मानव के अधिकारों तथा मानव की गरिमा का मीड़िया में बहुत शोर मचाया जाता है। ऋषि के प्रादुर्भाव से पूर्व मानव के अस्तित्व का धर्म व दर्शन में महत्त्व ही क्या था?

बाइबिल की उत्पत्ति की पुस्तक में आता है कि परमात्मा ने जीव, जन्तु, पक्षी, प्राणी पहले बनाये फिर उसने कहा, ''Let us make man in our image.'' अब नये बाइबिल में शब्द बदल गये हैं। अब हमें पढ़ने को मिलता है, ''Let us make human beings in our image, in our likeness.'' अर्थात् परमात्मा ने कहा हम 'पुरुष को' (अब मानवों को) अपनी आकृति जैसा और अपने सरीखा बनायें। यह कार्य छठे दिन किया गया। मानव की इसमें गरिमा क्या रही? वह जीव-जन्तुओं से पीछे बनाया गया और क्यों बनाया गया? इसका उत्तर ही नहीं।

इस्लाम में मनुष्य को बन्द: कहा जाता है और भक्ति को उपासना को बन्दगी कहा जाता है। बन्द: का अर्थ है दास और बन्दगी का अर्थ दासता, सेवा करना आदि। तो यहाँ भी मानव की गरिमा क्या हुई? अबादत का अर्थ भी बन्दगी-दासता ही है। हिन्दू तो जगत् को मिथ्या व ब्रह्म को-केवल ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करते थे। कुछ आत्मा को अनादि भी मानते थे। सब कुछ अस्पष्ट था।

महर्षि दयानन्द जी ने सिंह गर्जना करके कहा कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि हैं। तीनों की सत्ता है। जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता का घोष करके ऋषि मानव की गरिमा पहली बार इस युग में संसार को बताई।

जहाँ कर्त्ता है, वहीं क्रिया होगी और जहाँ क्रिया है वहाँ कर्त्ता को मानना पड़ता है। सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रह, उपग्रह सब गति करते हैं। गति देने वाले परमात्मा की सत्ता तो स्वत: सिद्ध हो गई। उपादान कारण के बिना आज भी कुछ बनते नहीं देखा गया सो जगत् के उपादान कारण प्रकृति का अनादित्व भी सिद्ध हो गया। विज्ञान ऐसा ही मानता है। यह महर्षि दयानन्द की विश्व को बहुत बड़ी देन है।

मनुष्य की उत्पत्ति की बात चली तो यह भी जान लें कि बाइबिल में आता है "I give you every seed-bearing plant on the face of the whole earth and every tree that has fruit with seed in it. They will be yours for food."[1] फिर लिखा है, "Trees that were pleasing to the eyes and good for food."[2]

अर्थात् दो बार ईश्वर ने बाइबिल के अनुसार शाकाहार को मानव का पवित्र भोजन बताया व बनाया। यही वेदादेश है परन्तु ईसाई व मुसलमान ही मांसाहार व पशुहिंसा में अग्रणी हैं। ऋषि ने पेड़, पौधों, जलचर, नभचर व गाय आदि सब प्राणियों की मानव कल्याण व विश्व शान्ति के लिये सुरक्षा को आवश्यक बताया।

ऋषि बोध पर्व के दिन ऋषि के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार जाग उठे। उन्हें पता चला कि ईश्वर वह नहीं जिसे हम बनाते हैं। ईश्वर वह है जो सृष्टि का कर्त्ता है। ईश्वर खाता नहीं, वह खिलाता है। वह भोक्ता नहीं भोग देता है। वह द्रष्टा है। कर्म फल का भोग करने वाला जीव है। सर सैयद अहमद ने लिखा कि शिवरात्रि के दिन दयानन्द जी को जो ज्ञान हुआ क्या वह इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) नहीं था? आत्मा को प्रभु की आवाज सुनाई न दे तो दोष किसका? ऋषि ने स्वयं लिखा है कि आत्मा में नित्य गूञ्जने वाली आपकी आवाज को प्रभु हम सुनते रहें। मन में भय, लज्जा और शङ्का जो दुष्कर्म, पाप करते समय मनुष्य के मन में उत्पन्न होती है, ऋषि ने इसे ईश्वर की आवाज बताया है। पश्चिम के विद्वान् ने भी इसी बात को इन शब्दों में कहा है, ''There is a candle of the lord within us'' अर्थात् हमारे भीतर प्रभु की एक बत्ती प्रकाश करती रहती है।

महर्षि दयानन्द अपनी काया से बलवान् थे, वे अपने मन व मस्तिष्क से बलवान् थे और अपने आत्मा से भी महान् व बलवान् थे। कोलकाता विश्वविद्यालय के एक पूर्व दार्शनिक विद्वान् डॉ. महेन्द्रनाथ जी ने अत्यन्त मार्मिक शब्दों में लिखा है- ''Strong is the epithet that

thearyasamaj.org

can be applied in truth to Dayanand, strong in intellect, strong in adventures, strong in heart and strong in organising forces. And his teachings through life and writings can be summed up in one word STRENGTH. '' अर्थात् बलवान् एक ऐसी उपाधि है जो दयानन्द पर ठीक-ठीक चरितार्थ होती है, विचारों में- मस्तिष्क से बलवान्, साहसिक कार्य के कारण बलवान्, हृदय से बलवान् तथा शक्तियों के गठन करने में बलवान् और उसके जीवन एवं साहित्य द्वारा उसकी शिक्षाओं को एक शब्द में बताना है तो वह है '**शक्ति**'।

इससे अधिक हम ऋषि की महानता पर क्या कहें? ऋषि ने अपने सन्देश, उपदेश व जीवन द्वारा मानव समाज को प्रकाश दिया और मृतकों में नवजीवन का संचार किया। उनके बोध पर्व पर हम उन्हें शत बार नमन करते हैं।

**जब जागे तभी सवेरा परन्तु.....:-** हमने इन दिनों संघ प्रमुख श्रीयुत् मोहन भागवत तथा उनके साथियों के 'घर वापसी' पर टी.वी. में विचार सुने। उनके संघ परिवार के विचारकों स्वयं सेवकों को भी टी.वी. पर सुना। भागवत जी ने कहा, ''हिन्दू अब जागा है, हमें कोई रोक नहीं सकता। लूटा गया माल हम वापस लेंगे इत्यादि।'' अच्छी बात है हम तो पहले से ही कहते आये हैं कि सबको अपनाना चाहिये परन्तु हमारी सुनी किसने? चलो भाई! जब जागे तभी सवेरा। हमने कई वर्ष पूर्व एक गीत में लिखा था- 'खुले धर्म के द्वार ऋषि जब अलख जगाई' क्या संघ परिवार यह बतायेगा कि इनकी नींद कब खुली? कैसे खुली? अथवा यह कब जागे? किसने जगाया? जिसने जगाया उसका नाम तो बताने की कृपा करो। इन के चिन्तक श्री सिन्हा ने कहा, ''संघ आज से नहीं बहुत लम्बे समय से यह कार्य कर रहा है।'' दूसरे भाई ने कहा, ''सन् १९२५ में संघ कार्यक्षेत्र में है।''

सन् १९५३ में विनोबा जी काशी के विश्वनाथ मन्दिर में दलितों को लेकर प्रवेश करने लगे तो उनकी धुनाई, पिटाई कर दी गई। क्या संघ ने तब इस कुकृत्य की निन्दा की? जब हीरालाल को वापस लिया गया तब संघ ने कोई प्रतिक्रिया दी? आर्यसमाज और फिर मसूराश्रम घर वापसी-शुद्धि करता आया है। संघ ने कभी कहीं सहयोग दिया?

क्या अशोक सिंघल जी, भागवत जी ने कभी कहीं बताया कि वह पहला व्यक्ति कौन था जिसे इस युग में वापस लाया गया? लीजिये हम बताते हैं- वह था देहरादून का मोहम्मद उमर जिसे ऋषि दयानन्द ने अलखधारी नाम दिया। अब्दुल अज़ीज़ आदि मेधावी व्यक्तियों को पं. लेखराम जी परोपकारिणी सभा के सहयोग से घर वापस लाये। अजमेर में ही अब्दुल रहमान को वीर सोमनाथ बताया गया। सनातन धर्म कॉलेज लाहौर का प्रिं. रामदास वापस लाया गया। तब संघ ने चुप्पी क्यों साध ली? देवबन्द का लाला जगदम्बा प्रसाद भी तो मौलाना बना था। उसे कौन वापस लाया? सरदार पटेल को अनेक ऐतिहासिक कार्य में सहयोग देने वाला भारत माता का दुलारा प्यारा मेधातिथि मौलाना दऊदूदी जी का शिष्य था। उसे आर्य मुसाफिर पं. शान्तिप्रकाश बटाला में घर वापस लाये थे। तब घर वापसी के समय वहाँ एक भी संघी भाई ने दर्शन न दिये। सिर हथेली पर धर कर दक्षिण में हुतात्मा श्याम भाई, क्रान्तिवीर पं. नरेन्द्र, पं. गोपाल देव कल्याणी, हुतात्मा शिवचन्द्र, आर्यवीर लालसिंह ने निजाम राज्य में हिन्दुओं का धर्मान्तरण रोका या नहीं? वेदप्रकाश ने प्राण तक दे दिये। इन्हीं दिनों उसकी स्मृति में **गुंजोटी** महाराष्ट्र के विशाल समारोह में आप लोग दिखाई ही न दिये।

महोदय समर्थ गुरु रामदास जी को तिलाञ्जलि देकर आपने स्वामी विवेकानन्द जी को अपना सर्वस्व मान लिया। मुंशी इन्द्रमणि सरीखे हिन्दू रक्षक का पौत्र भगवत सहाय जब धर्मच्युत हुआ तब विवेकानन्द जी व उनके चेलों में से कोई आगे आया? मुंशी जी का एक और सम्बन्धी ईसाई बन गया। तब स्वामी विवेकानन्द जी अमेरिका में अंग्रेजी भाषण दे आये थे परन्तु वह कुछ न कर पाये। आगे ही न आये। ऋषि का शिष्य साहस का अंगारा पं. लेखराम तत्काल मुरादाबाद पहुँच गया। लाखों मलकानों की घर वापसी का इतिहास आप क्यों सुनाओगे। ऋषि दयानन्द का, पं. लेखराम का, स्वामी श्रद्धानन्द का आपकी विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यालयों में चित्र तक नहीं। उनका नाम लेने से आप डरते हैं। यह कृतघ्नता नहीं तो क्या है?

बोलकर, शोर मचाकर धर्म प्रचार नहीं होता। आप लोगों की भाषा संयत नहीं, व्यवहार संयत नहीं। टी.वी. में दर्शन देने का, फोटो का आपको रोग लग गया है। डॉ. हैडगवार का मार्ग छोड़कर विवाद खड़े करने का, अपने निज का, प्रचार का रोग संघ को लग गया है। जाति की बहुत क्षति हो ली। हमारा सुझाव आप नहीं मानेंगे। चुपचाप रह नहीं सकते। अनुभव से कुछ तो सीखो। लाख यत्न कर लो अब शाखा युग नहीं लौट सकता।

**श्री श्री रविशंकर जी की नीति:-** पता चला है कि

thearyasamaj.org

जब रामपाल की कमाण्डो सेना युद्ध रत थी। महिलाओं व बच्चों को आगे करके रामपाल छुपा-लुका बैठा था तब माननीय श्री श्री रविशंकर जी ने चलभाष पर उससे मीठी-मीठी बातें कीं। रामपाल की करतूतें, धर्मवीर सोनू, शहीद संदीप आर्य, वीराङ्गना पोमिला आर्या के बलिदान की सब ओर चर्चा थी। घने विद्वान् और महात्मा कहाने वाले श्री श्री जी ने नर पिशाच रामपाल को फटकार लगाने की बजाय उसे पुचकारने की नीति अपनाई। दूरदर्शन पर जब कई साधु धर्माचार्य रामपाल की दादागिरी, गुण्डागर्दी, ठगी, हत्याओं व अपार सम्पदा तथा देश से युद्धरत होने के लिए उसको लताड़ लगा रहे थे तब श्री श्री जी, बाबा रामदेव जी की प्रतिक्रिया सुनकर मुझे बड़ा धक्का लगा। दोनों ने कुछ खरी-खरी सुनाने की बजाय बड़े नपे-तुले नर्म शब्दों में अपने विचार रखकर अपनी कूटनीति का अच्छा परिचय दिया। खरी बात कहने से जो टले अब वही साधु-महात्मा है। रामदेव जी आर्यसमाज के गुरुकुलों में पढ़े। श्री श्री जी पूज्य वेदज्ञ पं. सुधाकर जी से वेद पढ़ते रहे। दोनों ने अच्छा ऋण चुकाया। जिन्होंने धर्मरक्षा में जानें वार दीं वे आर्यवीर अमर हो गये परन्तु वे इन महात्माओं जैसे दूरदर्शी तो नहीं थे।

**ऋषि दयानन्द तथा श्रद्धाराम, टकराओं का इतिहासः-** भारत सरकार की साहित्य अकादमी द्वारा पं. श्रद्धाराम फिलौरी पुस्तक में महर्षि दयानन्द के बारे में निराधार व मिथ्या बातें लिखकर लेखक ने सत्य व तथ्य की हत्या की है। परोपकारी में संक्षेप से उसका उत्तर दे दिया गया है। 'दयानन्द छल कपट दर्पण' से लेकर इस पुस्तक तक महर्षि दयानन्द पर वार-प्रहार होते चले आ रहे हैं। यह एक लम्बा इतिहास। उत्तर देने वालों को जानें भी देनी पड़ी हैं। श्री रामचन्द्र जी आर्य सोनीपत बधाई व धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस घातक प्रहार की जानकारी दी। लक्ष्मण जी व रामचन्द्र जी सजग न करते तो आर्यसमाज सोया पड़ा रहता। सब ओर से शोर मचा कि इस पुस्तक के उत्तर में पुस्तक छपनी चाहिये।

परोपकारिणी सभा की ओर से प्रमाणों व तथ्यों से परिपूर्ण पुस्तक शीघ्र प्रेस में चली जायेगी। श्रद्धाराम जी के विषय में तत्कालीन पत्रों में क्या-क्या छपा, इतिहासकारों ने क्या लिखा, ऐसे दस्तावेजों के प्रमाणों को स्कैनिंग करके पुस्तक में दिया गया है। श्रद्धाराम के हाथ से लिखे पत्र का भी फोटो दिया जा रहा है। दिल्ली के आर्य पुरुष श्री मनीष जी की राशि से यह पुस्तक छपने जा रही है। श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु भी सभा को सहयोग करेंगे। सम्पन्न समाजें व दानी भाई आगे आयें तो सभा प्रथम संस्करण की अधिक प्रतियाँ निकालकर मूल्य कम कर देगी।

इस पुस्तक के छपने से ऋषि जीवन विषयक पर्याप्त नई सामग्री प्रकाश में आयेगी। आर्य जनता पं. लेखराम के मिशन को आगे बढ़ाने में सभा को सहयोग करे।

**एक आर्य का पत्रः-** बहुत दिन हुये झज्जर क्षेत्र के एक स्वाध्याय प्रेमी आर्य भाई बलवन्तसिंह जी का एक पत्र आया। आपने परोपकारी में छपी मेरी टिप्पणी को ध्यान से नहीं पढ़ा। ईश्वर मूर्ति में तो व्यापक है ही, मैंने कई पुस्तकों, लेखों में लिखा है व प्रवचनों में सदा कहता हूँ कि प्रभु हर कण में है, वह हर मन में है, वह हर जन में है। हम उसमें हैं। वह हमारे भीतर है। मनसापरिक्रमा आदि मन्त्र इसका प्रमाण हैं। बलवन्तसिंह जी को अनजाने में भ्रम हो गया है। गंगा-ज्ञानधारा भाग तीसरा में ईश्वर की सत्ता, स्वरूप व उसकी उपासना पर मेरे विचार पढ़ लें। मेरा आर्यसमाज के दूसरे नियम पर अटल विश्वास है।

**अभी दिल्ली दूर हैः-** एक बार दिल्ली से श्री विवेक आर्य ने बहुत उत्साह से मुझे यह जानकारी दी कि 'वेदों का बहिशत' पुस्तक के लेखक अब्दुलहक विद्यार्थी का बेटा ईसाई पादरी है। उसका फोटो फेसबुक में देखकर वह ऐसा समझे। मैं यह सूचना पाकर दंग रह गया। मैं दसवीं कक्षा से इस्लामी साहित्य का विशेष अध्ययन करता चला आ रहा हूँ। थोड़ा विचार करने से बात समझ गया। मैंने उन्हें बताया कि अब्दुलहक नाम के दो व्यक्ति हुए हैं। जिस अब्दुलहक की बात आप करते हैं वह मिर्जाई था। उसका पुत्र पादरी नहीं है। जिस अब्दुलहक पादरी के पं. शान्तिप्रकाश जी, पूज्य देहलवी जी से शास्त्रार्थ हुए उसका पुत्र पादरी है। मैंने पादरी अब्दुलहक को बहुत देखा व सुना है। उसके पुत्र ने रुड़की के पास एक ग्राम में पं. शान्तिप्रकाश जी से यह कहकर शास्त्रार्थ करने से इनकार कर दिया था कि पण्डित जी मेरे पिता समान है, पूज्य हैं। इनके मेरे पिता से शास्त्रार्थ हुए। इनसे मैं शास्त्रार्थ नहीं करूँगा। तब पं. ओमप्रकाश जी खतौली वालों से शास्त्रार्थ हुआ। पं. ओमप्रकाश जी वर्मा तब वहीं थे।

अभी एक सज्जन ने दिल्ली के पास से यह लिखा है कि आर्यजगत् के एक विशेषाङ्क में माननीय भारतीय जी ने लिखा है कि सन् १९१७ में महात्मा हंसराज जी ने अंग्रेजी में एक ग्रन्थ लिखा. The great seer or Interpretation of the vedas by Swami

thearyasamaj.org

Dayanand Saraswati. यह भी लिखा है कि इसका उर्दू अनुवाद भी छपा था। आपने यह पूछा है कि यह ग्रन्थ कितना बड़ा है? कहाँ से मिलेगा? आप इसका हिन्दी अनुवाद कर दें।

मेरा निवेदन है कि महात्मा हंसराज जी ने कोई ग्रन्थ लिखा ही नहीं। दो-तीन छोटी-छोटी पुस्तकें व एक ट्रैक्ट। उनके भाषणों व लेखों के संग्रह दूसरों ने संग्रहीत किये। मैंने कुछ और भाषण व लेख खोज कर उर्दू में छपे अन्य संग्रहों से चुनकर हिन्दी में तीन संग्रह अनूदित सम्पादित करके प्रकाशित करवाये।

जिस ग्रन्थ की भारतीय जी ने चर्चा की है, यह तो एक लघु पुस्तिका है। मैंने इसको भी हिन्दी में अनूदित कर छपवा दिया। अंग्रेजी में यह दो बार छपा। दोनों संस्करण मेरे पास हैं। इस समय इसकी एक प्रति मेरे सामने रखी है। डिमाई आकर में छपे तो ३७-३८ पृष्ठ का ट्रैक्ट बनेगा। अपने मन की प्रसन्नता के लिए कोई इसे ग्रन्थ घोषित करे तो उसे कौन रोक सकता है? सत्य यह है कि यह ट्रैक्ट भी नहीं था, व्याख्यान था। हम लोग जब कुछ भी सुनकर बिना देखे, पढ़े प्रत्येक भ्रामक जानकारी को अपनी खोज समझकर प्रचारित कर देते हैं तो फिर भ्रान्तियों का कुचक्र चल पड़ता है। जाँच तो करो। अभी दिल्ली दूर है। मित्रों गम्भीर स्वाध्याय करो।

**प्रथम आर्य सत्याग्रही:-** गुंजोटी में एक भाई ने पूछा दक्षिण में बलिदान की अखण्ड परम्परा वीर वेदप्रकाश से आरम्भ हुई आपका यह कथन सत्य है। हैदराबाद सत्याग्रह का प्रथम सत्याग्रही कौन था? मैंने उत्तर दिया कि मैंने पहला सत्याग्रही कौन था, यह भी भलीप्रकार से लिखा व बताया है। धर्म दीवाने पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री जी प्रथम सत्याग्रही थे जिन्हें श्याम भाई ने बहुत पहले दक्षिण में खींच लिया। कहाँ कादियाँ! और कहाँ शोलापुर!! स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने जेल नहीं जाने दिया। वह प्रचार तन्त्र के सेनापति बनाये गये। कवि ने इन रणवीरों के लिये ही तो लिखा है:-

**तेरे दीवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये,**
**हैरत में लोग रह गये दुनिया का दिल दहला दिया।**

**आर्य पत्रों की समाचार शैली कैसी थी?:-** हरियाणा में एक आर्य प्रचारक के निधन पर शोक सभा में भाषण देने व भाग लेने वाले अनेक सज्जनों के नाम पत्र में पढ़े। मरने वाले के बारे में चार पंक्तियाँ भी नहीं छपी मिलीं। इसे नाम की भूख कहें या हमारे आज के पत्रों का घटिया स्तर? यत्न करूँगा कि सौ, सवा सौ वर्ष पुराने पत्रों में छपे समाचार दो-चार लेखों में दूँ। अब सिद्धान्त की बात नहीं होती, लीडर सूची समाचारों में होती है। यह बहुत दु:ख का विषय है। पं. लेखराम जी तथा महात्मा मुंशीराम जी उत्सवों में विद्वानों के व्याख्यानों का सार दिया करते थे। सबसे अन्त में अपने भाषण की चर्चा किया करते थे। 'आर्य समाचार' मेरठ के प्रचार-समाचार पाठकों में उत्साह व जोश का संचार कर देते थे। आज के पत्र तो 'लीडर नामा' और व्यक्तियों के प्रचार को बढ़ाने वाले हैं। 'सार्वदेशिक' मासिक के १९३८-१९४६ तक के अंकों को देखिये....।

**सद्धर्मप्रचारक उर्दू हिन्दी का जन्म-भ्रान्ति निवारण-** किसी के लेख में यह छपा बताते हैं कि महात्मा मुंशीराम जी ने रात-रात में 'सद्धर्मप्रचारक' उर्दू साप्ताहिक को हिन्दी में कर दिया। एक प्रबुद्ध आर्य भाई ने चलभाष पर प्रश्न किया कि 'सद्धर्मप्रचारक' को हिन्दी में निकालने के महात्मा जी के साहसिक क्रान्तिकारी पग पर आप प्रामाणिक तथ्यपरक प्रकाश डालें। यह प्रश्न तो उन्हीं लेखक जी से पूछा जाता तो अच्छा होता तथापि मैं किसी आर्य भाई को निराश नहीं करता। कोई चार दिन पूर्व तड़प-झड़प लिखकर भेजी तो कुछ समाधान करते हुए लिखा कि स्मृति के आधार पर बहुत कुछ लिखा है। सद्धर्मप्रचारक की अन्तिम फाईल खोज कर कोई भूल मेरे लेख में होगी तो उसे फिर सुधार कर दूँगा।

अब चैन कहाँ? वह फाईल खोज निकाली। लीजिये! 'सद्धर्मप्रचारक' के जन्म-पुनर्जन्म का प्रामाणिक इतिहास। सुन-सुनाकर और कुछ कहानी को चटपटा बनाने वाले इतिहास को प्रदूषित करने का अवसर हाथ से जाने नहीं देते। अनजाने में भी इस पत्रिका के बारे में कई एक ने कई भ्रान्तियाँ फैला रखी हैं। आज यथासम्भव सब भ्रामक लेखों का निराकरण हो जायेगा।

महात्मा मुंशीराम जी ने रात-रात में अथवा एकदम 'सद्धर्मप्रचारक' उर्दू को हिन्दी में नहीं निकाला था। हाँ! जब निश्चय कर लिया तो फिर टले नहीं। घाटा, हानि का भय दिखाया गया परन्तु उन्होंने हानि लाभ की चिन्ता नहीं की, पग दृढ़ता से आगे धरते गये। 'प्रचारक की काया पलट का दृढ़ निश्चय' एक लम्बा लेख पाँच अक्टूबर सन् १९०६ के अंक में दिया था। यह मेरे सामने है।[३] इसके बाद निरन्तर पाँच मास तक प्राय: प्रत्येक अंक में प्रचारक के हिन्दी संस्करण के बारे में विज्ञापन तथा लेख छपते रहे

thearyasamaj.org

जो सब मेरे पास हैं। सद्धर्मप्रचारक के सम्पादकीय लेख एक ग्रन्थ के रूप में भी बाद में छपे थे जो इतिहास की धरोहर है और बहुत से तथ्यों पर जिससे प्रकाश पड़ता है। वह ग्रन्थ मेरे पास भी है और बन्धुवर सत्येन्द्रसिंह आर्य के पास भी है। विस्तारपूर्वक एतद्विषयक जानकारी इतिहास प्रेमी चाहेंगे तो फिर कभी यह सेवा भी की जा सकती है।

१. डॉ. जे. जार्डन्स जी ने लिखा है कि उर्दू सद्धर्म-प्रचारक सन् १८८८-१९०७ तक निकलता रहा।[४] यह सत्य नहीं है। लेखक से भूल हुई है। किसी ने कभी इस चूक पर दो शब्द नहीं लिखे।

२. स्वामी श्रद्धानन्द जी पर हिण्डौन से छपे ग्रन्थ में लिखा है कि उर्दू सद्धर्मप्रचारक का जन्म १९ फरवरी १८८९ में हुआ[५], यह भी सत्य नहीं। भ्रामक कथन है।

प्रबुद्ध पाठक नोट करें कि इस समय मेरे सामने सद्धर्म-प्रचारक का प्रथम अंक है। यह १३ अप्रैल सन् १८८९ को निकला था। तब इसके आठ ही पृष्ठ होते थे। एक ही वर्ष में पृष्ठ संख्या १६ और सन् १९०७ में १८ और कभी-कभी २२ पृष्ठ भी होते थे। मैंने सब अंक देखे हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने भी सद्धर्मप्रचारक का जन्म वैशाखी (१३ अप्रैल) लिखा है।

३. हिण्डौन वाले ग्रन्थ में इसके जन्म की एक और स्थान पर भी जन्म तिथि १९ फरवरी १८८९ छपी है जो ठीक नहीं है।[६]

सेवा का एक अवसर मिला। भ्रम भञ्जन कर दिया। पूरी खोज करने में लगा तो पता चला कि अपने समय के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् और पं. बाल शास्त्री काशी के शिष्य गोस्वामी घनश्याम मुलतान निवासी सद्धर्मप्रचारक उर्दू के नियमित लेखक थे। उनके कई लेख मिले हैं। इनको हिन्दी में अनूदित करके 'परोपकारी' में प्रकाशित करवा दिया जायेगा। वे 'परोपकारी' के भी तो लेखक रहे।

**टिप्पणियाँ**

१. द्रष्टव्य - GENESIS १-२१
२. द्रष्टव्य - GENESIS २-१
३. द्रष्टव्य - 'सद्धर्मप्रचारक' उर्दू का परिशिष्ट पृष्ठ १, २ दिनांक पाँच अक्टूबर सन् १९०६
४. द्रष्टव्य - Swami Shradhanand by J. Jordens Page 198
५. स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्त्व पृष्ठ ५५
६. द्रष्टव्य - वही पृष्ठ ४८

**- वेद सदन अबोहर, पंजाब**

# आर्यों की आशा का केन्द्र - परोपकारिणी सभा

यह आनन्ददायक सूचना देते हुए हमें हर्ष होता है कि धरती तल के सब वेदाभिमानी आर्यों का आशा केन्द्र इस समय ऋषि जी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा है। देशभर के धर्मनिष्ठ, जातिभक्त आर्यसमाजेतर धर्माचार्य धर्म-रक्षा के लिए निरन्तर सभा के सम्पर्क में रहते और परोपकारी पाक्षिक के नियमित पाठक हैं। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी से आर्य भाई चलभाष द्वारा सभा के विद्वानों से धर्मचर्चा व शंका समाधान करते रहते हैं। इस समय संक्षेप से इतनी ही जानकारी देते हुए हमें हर्ष होता है। फिर कभी पूरा समाचार दिया जायेगा।

सभा के पास इस समय सर्वाधिक विद्वान् हैं जो पूरा वर्ष अनुसन्धान व प्रचार में लगे रहते हैं। सभा शोध करने वालों को पूरा सहयोग देती व मार्गदर्शन करती है। हम अथक कार्य करके भी सन्तुष्ट नहीं हैं। घना कोहरा व घोर अन्धकार अनेक धर्म रक्षक योद्धाओं की सेवायें माँगता है। एक-एक आर्य अपने कर्त्तव्य को समझे और सभा से जुड़े।

सभा धर्म पर होने वाले आक्रमण का प्रतिकार करने में प्रतिपल तत्पर है। पं. श्रद्धाराम का नाम लेकर ऋषि पर घिनौना आक्रमण करने वाली पुस्तक का सभा ने सूचना पाते ही परोपकारी में उत्तर दिया। इसी विषय पर एक खोजपूर्ण पुस्तक तैयार करवाकर सभा ने छपने दे दी है।

पुस्तक के प्रकाशन में एक आर्य दानी ने सहयोग किया है। समाजें आगे आयें। इसका बहुत प्रचार-प्रसार करके अपने जीवन का परिचय दें।

**- मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर**

thearyasamaj.org

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

**IFSC-SBIN0007959**

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

**IFSC-IBKL0000091**

email : psabhaa@gmail.com

**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

## आस्था भजन ( चैनल ) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

# दक्षिण भारत में आर्यसमाज का योगदान

- डॉ. ब्रह्ममुनि

पिछले अंक का शेष भाग......

शैक्षिक संस्थाएँ:- निजाम के राज्य में शिक्षा का अभाव था। बड़े-बड़े शहरों में भी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। अधिकांश जनता निरक्षर थी जिसके परिणामस्वरूप नवीन विचारों का स्पर्श तक न था। इतिहास, विज्ञान, गणित इत्यादि विषय उर्दू में पढ़ाएँ जाते थे। मातृभाषा में शिक्षा न दी जाने के कारण अनेक अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे। निजी विद्यालयों पर प्रतिबन्ध था, तथापि राष्ट्रीयता, नैतिकता, धार्मिक विचारों के लिए प्रतिबन्ध होते हुए भी १९१६ से १९३५ तक अनेक निजी संस्थाएँ शुरू की गई। जिसमें गुलबर्गा का नूतन विद्यालय, हिपरगा का राष्ट्रीय विद्यालय और हैदराबाद का केशव स्मारक आर्य विद्यालय प्रमुख हैं। इनके साथ-साथ आर्यसमाज ने भी अपने गुरुकुल तथा उपदेशक महाविद्यालयों की स्थापना की जिनमें वैदिक सिद्धान्त, वैदिक धर्म, नैतिकता की शिक्षा हिन्दी में दी गई। इनमें प्रमुख संस्थाओं में से कुछ निम्न हैं- विवेक वर्धिनी (हैदराबाद), नूतन विद्यालय (गुलबर्गा), गुरुकुल धारूर (धारूर), राष्ट्रीय पाठशाला (हिपरगा), श्री कृष्ण विद्यालय (गुंजोटी), श्यामलाल (उदगीर), नूतन विद्यालय (सेलू), गोदावरी कन्याशाला (लातूर), गुरुकुल घटकेश्वर कन्या गुरुकुल (बेगमपेठ), पुरानी कन्या पाठशाला (हैदराबाद), हिन्दी पाठशाला (हलीखेड़) इत्यादि। उपर्युक्त सभी संस्थाओं में सेवाभावी शिक्षक अर्वाचीन विषयों की मातृभाषा में शिक्षा देकर उनमें राष्ट्रीय-भावना जाग्रत करते थे। जिससे हजारों विद्यार्थियों ने स्वतन्त्रता-संग्राम तथा हैदराबाद मुक्ति-संग्राम में सक्रिय भाग लिया तथा स्वतन्त्रता-संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

**हुतात्मा:-** आर्यसमाज के सामाजिक और धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार के कारण युवकों में राष्ट्रीयता के विचारों का जागरण हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप विदेशी सत्ता के सभी सुखों तथा प्रलोभनों को लात मार कर अनेक युवकों ने शासकों का खुलकर विरोध किया जिससे वे सरकार के कोपभाजन बने। निजाम ने तो उन्हें अनेक यातनाएँ दी हैं जिनसे अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों के स्वास्थ्य खराब हुआ, कुछ विकलांग हुए तो कुछ लोगों को अपने प्राणों की बलि भी देनी पड़ी। इसके साथ-साथ निजाम के अनुयायी एवं रजाकार भी इनके विरुद्ध हुए अत: वे इन देशप्रेमियों को छल-कपट से मारने की योजनाएँ बनाने लगे। गुंजोटी (महाराष्ट्र) का नौजवान वेदप्रकाश रजाकारों के अन्यायों के विरोध में आवाज उठाता था, इतना ही नहीं उनका प्रतिकार भी करता था जो रजाकारों की आँखों में खटकता था।

रजाकारों ने वेदप्रकाश को मारने का षड़यन्त्र रचा क्योंकि उस बहादुर के साथ सामना करने की रजाकारों में हिम्मत न थी। वह रणबांकुरा था। अत: रजाकारों ने छल-कपट से गाँव में उसकी निर्मम हत्या की। किन्तु जैसे ही राष्ट्रयज्ञ हुतात्मा वेदप्रकाश की आहुति पड़ी तो विद्रोह का ज्वालामुखी ऐसा फटा जिसे रोकना निजाम के लिए भी कठिन हो गया। इसी प्रकार यातना की शृंखला तथा छल-बल का सिलसिला निजाम का आगे बढ़ता रहा। जिसके परिणामस्वरूप उदगीर दंगे में दण्डित आर्यजगत् के उद्‌भट योद्धा, प्रखर सेनानी भाई श्यामलाल को भी विष देकर अमानवीय रूप से मारा गया। इसी प्रकार उपसा गाँव के रामचन्द्राराव पारीक का अत्यन्त क्रूरता पूर्वक वध किया। ईट गाँव के टेके दम्पति ने बड़ी हिम्मत तथा बहादुरी से रजाकारों का सामना किया। वे न डगमगाए, न मौत से घबराए, और अन्त तक अनेक रजाकारों को अकेले ही सामना करते हुए दोनों पति-पत्नी राष्ट्र के लिए शहीद हुए। इसी प्रकार अन्य बसव कल्याण के धर्मप्रकाश को भी चौक में रजाकारों ने छल-कपट से मारा, किन्तु उसकी शहादत ने सम्पूर्ण कर्नाटक में निजाम के विरोध में आँधी सी आई।

**उपदेशकों/पुरोहितों द्वारा प्रचार:-** यद्यपि मुम्बई में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई, किन्तु उत्तर भारत में इसका जन-सामान्य तक प्रचार-प्रसार हुआ। उसका प्रमुख कारण यह भी था कि वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा के लिए तथा उपदेशक बनाने के लिए उपदेशक महाविद्यालयों की स्थापना उत्तर भारत में ही अधिकांश रूप में हुई। अत: दक्षिण भारत के इच्छुक आर्यसमाजियों ने लाहौर उपदेशक महाविद्यालय का अवलम्बन लिया। वहाँ से वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करके उन्होंने अपनी कर्मभूमि दक्षिण भारत को बनाया। हैदराबाद के सुल्तान बाजार आर्यसमाज ने भी अनेक उपदेशकों को

thearyasamaj.org

मराठवाड़ा, कर्नाटक तथा आन्ध्रप्रदेश के गाँव-गाँव में भेजकर जन-जागरण का कार्य तो किया ही, साथ ही आर्यसमाज की सैद्धान्तिक भूमिका को भी विशद किया। वेदों के प्रकाण्ड पण्डित श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड का नाम इसमें सर्वप्रमुख है। उन्होंने दक्षिण की अनेक भाषाओं को स्वयं सीखा और उन्हीं की भाषा में वैदिक सिद्धान्तों का समर्पण भाव से प्रचार किया। इनके साथ-साथ पं. कामना प्रसाद, पं. नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, पं. विश्वनाथ आर्य, पं. वामनराव येलनूरकर (बसवकल्याण), प्रेमचन्द प्रेम, पं. मदनमोहन विद्यासागर, पं. सुधाकर शास्त्री (बसवकल्याण), श्रीमती माहेश्वरी (मैसूर), राधाकिशन वर्मा (केरल) इत्यादि अनेक उपदेशक अपने उपदेशों से जनसामान्य एवं प्रबुद्ध दोनों ही वर्गों को वैदिक सिद्धान्तों का तथा वेद-मन्त्रों का भाष्य कर आर्यसमाज की दार्शनिक, सामाजिक एवं पारिवारिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते रहे। निजाम के राज्य में जहाँ महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया गया था, वहाँ आर्यसमाज ने उन्हें शिक्षित ही नहीं किया अपितु लोपामुद्रा, मैत्रेयी जैसी वैदिक ऋषिकाओं के पद-चिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया।

**गुरुकुलीय विद्यार्थियों का योगदानः-** महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धान्त, वैदिक संस्कृति और वैदिक जीवन-पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए प्राचीन काल से चली आ रही गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति के प्रचलन पर जोर दिया तथा मैकाले द्वारा प्रचलित शिक्षा-पद्धति का विरोध किया, जिसमें केवल क्लर्क तैयार करने का लक्ष्य रखा था। उत्तर भारत में गुरुकुल कांगड़ी, ज्वालापुर, वृन्दावन, कुरुक्षेत्र इत्यादि अनेक गुरुकुल खोले गए, जिनमें शिक्षा पद्धति वैदिक संस्कृति के अनुकूल थी, साथ ही उनकी जीवन-पद्धति अत्यन्त सादगी भरी थी। उनका सिद्धान्त था- **विद्यार्थिनः कुतो सुखम्, सुखार्थिनः कुतो विद्या।** इनमें कुछ-कुछ गुरुकुलों में आर्ष-पद्धति अपनाई गई थी तो कुछ गुरुकुलों में प्राचीन एवं अर्वाचीन विषयों का समन्वय था। किन्तु कुछ विषयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी एवं कुछ का संस्कृत था। इतना ही नहीं लड़कियों की शिक्षा के लिए स्वतन्त्र रूप से अलग गुरुकुल खोले गए। इसी गुरुकुल प्रणाली के आधार पर दक्षिण में धारूर (महाराष्ट्र) में गुरुकुल खोला गया तथा बाद में गुरुकुल घटकेश्वर, गुरुकुल अनन्तगिरि कन्या गुरुकुल (सभी हैदराबाद), गुरुकुल वार्शी, गुरुकुल येडशी, श्रद्धानन्द गुरुकुल परली इत्यादि अनेक गुरुकुलों की स्थापना की गई। इन गुरुकुलों से अधीत स्नातकों ने दक्षिण में वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में एवं साहित्य-निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिनमें कुछ नाम उल्लेखनीय हैं- डॉ. भगतसिंह राजूरकर (पूर्व कुलपति, औरंगाबाद, वि.वि.), डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे वेदालंकार, प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार, डॉ. कुशलदेव कापसे, डॉ. हरिश्चन्द्र धर्माधिकारी, डॉ. सियवीर विद्यालंकार, श्रीमती मीरा विद्यालंकृता, स्व. शकुन्तला जनार्दनराव वाघमारे, श्रीमती सत्यवती वाघमारे, श्रीमती प्रमिला वाघमारे, श्रीमती सुशीला देवी, निवृत्तिराव होलीकर इत्यादि। आधुनिक काल में भी मराठवाड़ा विभाग में सैकड़ों गुरुकुलीय विद्यार्थी वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार अपने-अपने कार्यों में रत रहते हुए कर रहे हैं और साथ ही लेखन-कार्य भी करके आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रसार कर रहे हैं।

**संस्कृत और हिन्दी को योगदानः-** महर्षि दयानन्द के द्वारा आर्ष ग्रन्थों को प्रामाणिक मानने तथा संस्कृत भाषा को सभी भारतीय भाषाओं की जननी मानने के कारण वैदिक सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रभाषा-हिन्दी को प्रस्थापित किया। अतः आर्यसमाज के विविध कार्यकलापों और साहित्य की भाषा हिन्दी के रूप में अभिव्यक्त हुई। जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारत के लेखकों तथा चिन्तकों ने भी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम संस्कृत और हिन्दी को बनाया। सम्पूर्ण मराठवाड़ा के शिक्षा-क्षेत्र में संस्कृत का जो प्रचार है उसमें आर्यसमाज की संस्थाओं में शिक्षित विद्यार्थी आज जो अध्यापन-कार्य कर रहे हैं, उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मराठवाड़ा के प्राचार्य हरिश्चन्द्र रेणापूरकर जैसे संस्कृत के उद्भट विद्वान् और कवि ने लगभग २५ संस्कृत ग्रन्थों का प्रणयन किया। जिन्होंने कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश में संस्कृत के प्रचार-प्रसार में महनीय कार्य किया। अभी कुछ मास पूर्व ही वे राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय स्तर के संस्कृत विद्वानों के लिए निर्धारित- बादरायण पुरस्कार से सम्मानित किए गए, जो वस्तुतः आर्यजगत् का ही गौरव है। इसके सिवाय अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों में गुरुकुलीय स्नातक संस्कृत के अध्यापन के साथ-साथ प्रचार का कार्य कर रहे हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने (पूर्वाश्रमी स्वतन्त्रता सेनानी रामचन्द्रराव विदरकर) जो स्वयं संस्कृत से अछूते थे किन्तु आर्यसमाज लातूर में अनेक वर्षों तक संस्कृत के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराई जिसने इस क्षेत्र में संस्कृत प्रचार की आधारशिला रखी।

thearyasamaj.org

संस्कृत के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी दक्षिण भारत में होने का कारण आर्यसमाज ही है। आर्यसमाज के परिवारों में लगभग हिन्दी का ही व्यवहार होता है। इसके साथ दक्षिण-भारत से सैंकड़ों गुरुकुलीय स्नातक अपने-अपने प्रान्तों में हिन्दी का अध्यापन कर रहे हैं। आर्यसमाज से सम्बन्धित सभी व्यक्ति सामान्य बोलचाल में, कार्यालयों में, बाजार इत्यादि में अन्य सार्वजनिक स्थानों पर हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इसके साथ राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के अनेक परीक्षा केन्द्रों द्वारा हिन्दी की अनेक परीक्षाएँ दिलवाई जाती हैं। जिसने दक्षिण-भारत में हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत परीक्षा के केन्द्रों में संस्कृत का अध्यापन किया जा रहा है। डॉ. भगतसिंह विद्यालंकार, डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे (वेदालंकार), प्रो. भूदेव पाटील (विद्यालंकार), प्राचार्य दिगम्बरराव होलीकर, डॉ. चन्द्रदेव कवड़े जैसे गुरुकुलीय तथा आर्यसमाजी विद्वान् महाराष्ट्र सरकार के पाठ्यपुस्तक मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य, विद्यापीठीय पदाधिकारी महाराष्ट्र राज्य हिन्दी अकादमी इत्यादि संस्थानों के प्रमुख पदों पर रहने के कारण अनेक आर्यसमाजी लेखकों के पाठों का पाठ्यक्रमों में समावेश करा कर आर्यसमाज के कार्य एवं उसकी विचारधारा को नवीन पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इसके सिवाय लातूर, परली-बैजनाथ, हैदराबाद, औरंगाबाद, सेलू, जालना, नान्देड़ इत्यादि स्थानों पर हिन्दी माध्यम के विद्यालयों से भी हिन्दी के प्रचार में सहयोग हुआ। दक्षिण भारत में स्थित परली-बैजनाथ, वाशी, धारूर, हैदराबाद इत्यादि स्थानों के गुरुकुलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी तथा संस्कृत भाषा एवं साहित्य का अध्यापन होता है। कर्नाटक में कावेरी नदी के किनारे पर विशाल भूमि में स्थित 'शान्तिधाम' गुरुकुल में संस्कृत एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य हो रहा है। केरल में कालीकट काश्यप आश्रम के संस्थापक डॉ. राजेश भी वैदिक मन्त्रों की शिक्षा जन-सामान्य तक तथा आदिवासियों को भी देकर संस्कृत प्रचार की महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। १५ अगस्त को एम.डी.एच. के संस्थापक महाशय धर्मपाल से प्राप्त तीन करोड़ के सहयोग से 'वैदिक रिसर्च फाउंडेशन' की स्थापना की गई है। इसी प्रकार परली-वैजनाथ (महाराष्ट्र) के गुरुकुल में पूर्व सांसद तथा आर्यसमाज के विद्वान् शिक्षा शास्त्री डॉ. जनार्दन राव वाघमारे जी की सांसद निधि से निर्मित 'पं. नरेन्द्र वैदिक अनुसन्धन केन्द्र' की स्थापना की गई है। जिसका उत्तरायित्व प्रो. डॉ. कुशलदेव शास्त्री एवं प्रो. ओमप्रकाश होलीकर (विद्यालंकार) डॉ. ब्रह्ममुनि की अध्यक्षता में वहन किया जा रहा है।

**समाज सुधार:-** दक्षिण-भारत के बड़े भू-भाग पर निजाम का तथा अन्य विदेशी शासकों का आधिपत्य होने के कारण यहाँ की सामाजिक स्थिति अत्यन्त खराब थी। परम्परा से चली आ रही अनेक कालबाह्य रुढ़ियों में समाज जकड़ा हुआ था और बँटा हुआ भी था। जाति प्रथा, धर्मान्तरण की समस्या, स्त्रियों की शिक्षा, विधवा विवाह की समस्या, परित्यक्ता स्त्री की समस्या इत्यादि समस्याओं से समाज ग्रस्त होने के कारण जड़ हो गया। इसे गतिशील बनाने का कार्य आर्यसमाज ने किया। आर्यसमाज मूलत: प्रगतिशील विचारधारा है। अत: इसमें जातिप्रथा को समाप्त करने के लिए और समाज में भाईचारा लाने तथा ऊँच-नीच को समाप्त करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया। ये अन्तर्जातीय विवाह आर्यसमाज की विचारधारा के अनुरूप ब्राह्मण तथा अन्य उच्च जातियों के लोगों ने स्वयं तथा अपने पुत्र-पुत्रियों के सामान्य जाति में तथा पिछड़ी जातियों में किए। वस्तुत: उस समय यह क्रान्तिकारी कदम था। उन परिवारों पर अघोषित बहिष्कार जैसी स्थिति थी तथापि वे अपने निर्णय पर दृढ़ रहे। आज के अन्तर्जातीय विवाहों की पृष्ठभूमि वस्तुत: आर्यसमाज ने निर्माण की। शेषराव वाघमारे, डॉ. डी.आर. दास, केशवराव नेत्रगांवकर, हरिश्चन्द्र पाटील, माणिकराव आर्य, डॉ. जनार्दनराव वाघमारे, वीरभद्र, पं. ऋभुदेव, नरदेव स्नेही, देवदत्त तुंगार, धनंजय पाटील, शंकरराव सराफ, डॉ. धर्मवीर, दिगम्बरराव होलीकर, निवृत्तिराव होलीकर, नरसिंगराव मदनसुरे, डॉ. ब्रह्ममुनि, सुग्रीव काले, लक्ष्मणराव गोजे, बसन्तराव जगताप, रामस्वरूप लोखण्डे, संग्रामसिंह चौहान, दिनकरराव मोरे, किशनराव सौताडेकर, नारायणराव पवार, डॉ. भगतसिंह राजूरकर, इत्यादि आर्यसमाजियों ने जातिभेद निर्मूलन में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। जिसमें कुछ ब्राह्मणों ने अपनी पुत्रियों को दसिनों तथा पिछड़े वर्गों के लोगों में दी तथा अपने घर पिछड़े घर की बहुएँ लेकर आए। कुछ लोगों ने स्वयं भी अन्तर्जातीय विवाह किए और अपने पुत्र-पौत्रादि के विवाह भी अन्तर्जातीय, अन्तर्धर्मीय किए। वस्तुत: उपर्युक्त नामों के अतिरिक्त आज इस सूची में बहुत नाम जोड़ने आवश्यक हैं, किन्तु स्थानाभाव के कारण प्रारम्भिक एवं प्रतिनिधिक नाम ही परिगणित किए गए हैं।

इसके साथ-साथ समाज सुधार के कार्यों में व्यक्ति

thearyasamaj.org

निर्माण, परिवार निर्माण, आदर्श गृहस्थ निर्माण का कार्य भी आर्यसमाज ने किया। इसके सिवाय स्त्री शिक्षा, स्त्रियों को वेदाध्ययन के अवसर भी प्रदान किए, तभी स्त्रियाँ कन्या गुरुकुलों में जाकर विद्यालंकार बनकर शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। स्त्री-शिक्षा के साथ-साथ अज्ञान एवं अन्धविश्वास का निर्मूलन, वैदिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यसनमुक्ति, द्यूत-क्रीड़ा मुक्ति जैसे समाजोपयोगी एवं राष्ट्रोपयोगी कार्य आर्यसमाज ने प्रभूत मात्रा में किए। व्यक्ति एवं समाज की उन्नति तथा प्रगति के लिए शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक प्रगति की दिशा दर्शन का कार्य किया। राष्ट्रप्रेम, त्याग, समर्पण, अन्याय का विरोध, जनजागृति, वैदिक धर्म के प्रति प्रेम, स्वाभिमान-निर्माण, सामाजिक एकता, बन्धुभाव, राष्ट्रीय एकात्मता, शान्ति इत्यादि सकारात्मक मूल्यों को संवर्धित करने के अहर्निश प्रयत्न किए।

**राजनीतिः**- हैदराबाद स्टेट जो निजाम के आधिपत्य में था, उस समय वहाँ की प्रजा पर निजाम ने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, पत्रकारिता इत्यादि सभी दृष्टियों से अनेक प्रतिबन्ध लगाए थे और रजाकारों के माध्यम से प्रजा पर अन्याय और अत्याचार प्रारम्भ किए गए। उस समय आर्यसमाज के माध्यम से आर्यसमाजी नेताओं ने जनजागृति कर विद्रोह का स्वर अनुगुंजित किया तथा सत्याग्रह किया। देश की स्वतन्त्रता के समय भी आर्यसमाज के नेताओं ने स्वतन्त्रता-संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा उसका नेतृत्व किया। तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अधिकांश आर्यसमाजी नेताओं ने विविध दलों में प्रवेश कर मन्त्री, विधायक, सांसद इत्यादि स्थानों पर चयनित होकर देशभक्ति तथा राष्ट्र-निर्माण का कार्य किया। यद्यपि इसकी नामावली प्रदीर्घ है तथापि प्रतिनिधि रूप से कुछ नाम निम्नलिखित हैं:- पं. नरेन्द्र, विनायक राव विद्यालंकार, शेषराव वाघमारे, तुलसीराम कांसले, कोरटकर, शिवाजीराव निसंगेकर, जनार्दनराव वाघमारे इत्यादि।

**धार्मिक प्रचारः**- निजाम ने अपने राज्य में वैदिक धर्म के प्रचारकों, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों पर अनेक प्रकार के बन्धन लाद दिए थे। उनके प्रवचन, शास्त्रार्थ, उपदेश इत्यादि धार्मिक अधिकारों पर अनेक पाबन्दियाँ लगा दी गई थी। मध्य-दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद ने उपदेशक और भजनोपदेशक नियुक्त कर देहातों में प्रचार किया। एक ईश्वर, एक धर्म, एक धर्मग्रन्थ, एक जाति का प्रचार कर राष्ट्रैक्य का निर्माण अपने प्रवचनों, भजनों तथा उपदेशों द्वारा किया। समय-समय पर उत्तर भारत के विद्वानों को आमन्त्रित कर श्रावण मास में श्रावणी सप्ताह के अवसर पर प्रचार करते रहे। स्वातन्त्र्योत्तर काल में वही काम महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, कर्नाटक आ.प्र. सभा तथा आन्ध्र आर्य प्रतिनिधि सभा कर रही है। पं. नरदेव स्नेही, पं. विश्वनाथ (जहीराबाद), पं. कर्मवीर, पं. नरेन्द्र, श्यामलाल, बंसीलाल इत्यादि ने बहुत परिश्रम से रास्ते न रहने वाले गाँवों में जाकर प्रचार जमकर किया। उपर्युक्त विद्वानों के साथ-साथ आजकल डॉ. ब्रह्ममुनि जी के नेतृत्व में उतर भारत के अनेक विद्वान्- प्रो. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. वेदपाल, प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. महावीर जी, आचार्य नन्दिता जी शास्त्री, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु तथा महाराष्ट्र के भी अनेक गुरुकुलीय स्नातक, भजनोपदेशक, उपदेशक वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं जिनमें प्रमुख नाम निम्न हैं- प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार, पं. सुरेन्द्रदास जी, प्राचार्य देवदत तुंगार, डॉ. नयनकुमार आचार्य, पं. नारायणराव कुलकर्णी, ज्ञानकुमार आर्य इत्यादि। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा (परली-वैजनाथ) द्वारा 'वैदिक गर्जना' नामक मुखपत्र भी पाक्षिक रूप में डॉ. ब्रह्ममुनि जी के मार्गदर्शन में तथा डॉ. कुशलदेव शास्त्री के निधन के बाद अत्यन्त कुशलता से डॉ. नयनकुमार आचार्य के सम्पादकत्व में तथा विद्वज्जनों के सम्पादक मण्डल के दिशा-निर्देश में प्रकाशित होता है, जो महाराष्ट्र के आर्यजगत् विद्वानों पर सामयिक रूप से विशेषांक निकालकर उनके कृतित्व को उजागर करता है।

उपर्युक्त सभी विद्वान् अपने व्याख्यानों तथा विविध शिविरों द्वारा धार्मिक प्रचार एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं। साथ ही वार्षिकोत्सव संस्कारों तथा वैदिक साहित्य एवं लेखन से भी प्रचार करते हैं। लातूर से श्री स्वतन्त्रता सेनानी जड़े जी के सुपुत्र के सम्पादकत्व में **लातूर समाचार** साप्ताहिक तथा दैनिक आर्यजगत् के विद्वानों के लेखों को मराठी तथा हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

---

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८**

thearyasamaj.org

# अण्डमान प्रचार यात्रा

– प्रभाकर आर्य

सभा द्वारा किये जा रहे प्रचार के अन्तर्गत इस वर्ष नेपाल और अण्डमान में वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य किया गया। श्री नौबतराम वानप्रस्थी ने तीन मास नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य किया। सभा द्वारा दो सौ सत्यार्थप्रकाश नेपाली भाषा में ब्र. नन्दकिशोर द्वारा प्रकाशित व वितरित किये गये।

इसी क्रम में ब्र. कर्मवीर तथा ब्र. प्रभाकर ने गत दिनों पैंतीस दिनों तक अण्डमान में वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनका यह यात्रा विवरण आपके लिए प्रेरणा देगा, इस भावना से प्रकाशित किया जा रहा है। -सम्पादक

आदरणीय आर्यसज्जनों! यह कोई लेख नहीं बल्कि वैदिक धर्म की प्रथम प्रचार यात्रा का मेरा एक अनुभव है। इस बार ऋषि मेले पर पता चला कि आचार्य कर्मवीर जी सभा की ओर से अण्डमान द्वीप में प्रचार के लिये जा रहे हैं। मेरे लिये अवसर था। डॉ. धर्मवीर जी से पूछा तो उन्होंने मुझे भी सहर्ष अनुमति दे दी।

अण्डमान की भौगोलिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जाने बिना यहाँ किये गये (या भविष्य में किये जाने वाले) कार्यों को समझना जरा कठिन होगा, क्योंकि दोनों ही यहाँ के जीवन, रहन-सहन, खान-पान पर पर्याप्त प्रभाव डालते हैं। सुनामी में फसलें खराब हो जाने से लोगों का हौंसला टूट गया और वे खेती छोड़कर अन्य कार्यों को करने लगे। लोगों का पेट भरने की पूरी जिम्मेदारी मछलियों और मुर्गियों पर आ पड़ी, जिसे वे अपने प्राणों का बलिदान देकर निभा भी रही हैं। परिणाम-पूरे पोर्ट ब्लेयर (राजधानी में) पूर्ण शाकाहारी भोजनालय केवल दो-तीन हैं। उनमें से कुछ की गरिमा है। यदि उनमें प्रतिदिन भोजन किया जाता तो पन्द्रहवें दिन किराया भी मंगवाना पड़ता । उनमें से एक हमारे हर प्रकार से अनुकूल था, उसका हम दोनों ने संशयरहित होकर सर्वसम्मति से चयन किया। यह है भोजन की स्थिति।

यह द्वीप एक केन्द्र -शासित प्रदेश है। यहाँ से सरकार को आय तो कम है, पर व्यवस्थाओं पर खर्च अधिक करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि ये द्वीप भारत की सामुद्रिक सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण है, इसलिये आजादी के बाद जमीनें व सुविधाएँ देकर अलग-अलग प्रान्तों से लोगों को बसाया गया, जिससे कि द्वीप सुरक्षित रहे। अण्डमान छोटा-सा प्रान्त है (४ लाख आबादी)। इसलिये विवाह के लिये ज्यादा औपचारिकताएँ नहीं है। किसी-किसी परिवार में हिन्दु-मुस्लिम-ईसाई एक साथ ही दृष्टिगोचर हो जाते हैं, परिणाम - प्रायः सर्वधर्मसमन्वय सरकार हर चीज पर पर्याप्त छूट देती है, इसलिये लोग ज्यादा परिश्रम की आवश्यकता नहीं समझते। क्योंकि यहाँ पर पर्यटक अधिक संख्या में आते हैं, इसलिये स्वाभाविक रूप से लोग किसी भी आगन्तुक को अतिथि नहीं मानते। जब कहीं भ्रमण पर निकलते तो चने आदि साथ लेकर चलते। यहाँ के लोग प्रायः अपने तक ही सीमित है, समाज/पड़ोस से कोई खास लेना देना नहीं है। जब हम पोर्ट-ब्लेयर पहुँचे तो हमारे लिये सब कुछ अपरिचित था-स्थान,लोग,व्यवहार। एक भी व्यक्ति परिचित नहीं था। हाँ, हमारे रहने का प्रबन्ध सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी के परिचय से हो गया था। इन सब स्थितियों में हमने अण्डमान में कदम रखा।

हमारा सबसे पहला काम था-परिचय करना। और उसके लिये जरुरी था-घूमना। चार कदम चलते ही पता चला कि सूर्य देवता भी अपरिचित हैं। नवम्बर में भी जून जैसी गर्मी। पर थोड़े ही दिनों में सूर्य देवता के साथ काम करने का अच्छा अभ्यास हो गया। हालांकि जितनी त्वचा कपड़ों से ढकी थी, वही सुरक्षित रह पायी बाकी ने तेज धूप के कारण गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। यात्रा शुरु हुयी। पोर्टब्लेयर के गुरुद्वारा, मन्दिर और प्रायः सभी सामाजिक संस्थाओं से परिचय करने में हमें २-३ दिन लग गये। उसके साथ-साथ विद्यालयों में छात्रों से चर्चा करने, उनके बीच कार्य करने का विचार किया गया, पर यहाँ के राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य शिक्षा निदेशक की आज्ञा के बिना किसी तरह के कार्यक्रम की अनुमति नहीं देते। और शिक्षा निदेशक से अनुमति मिलना टेढ़ी खीर थी, इसलिये निजी विद्यालयों/छात्रावासों की ओर रुख किया। यहाँ सफलता मिली और हमारा पहला कार्यक्रम ३० नवम्बर को वनवासी कल्याण केन्द्र के छात्रावास में हुआ। दूसरा छः दिसम्बर को आर.जी.टी. पब्लिक स्कूल में हुआ। यहाँ पर छोटे बच्चे थे, लेकिन बुद्धिमान् व जिज्ञासु।

thearyasamaj.org
बुद्धि[illegible] और जिज्ञासुपन के लिये एक-एक उदाहरण देता हूँ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्य कर्मवीर जी ने बच्चों से एक प्रश्न पूछा कि ''मनुष्य के पास सबसे कीमती चीज क्या है।'' उत्तर में किसी ने मन, किसी ने बुद्धि, आत्मा, शरीर कहा। घर, गाड़ी आदि किसी ने नहीं कहा। जिसने प्रथम बुद्धि उत्तर दिया वह बच्चा एक मुस्लिम परिवार से था। ७-८ वर्ष के बच्चे प्राय: ऐसे उत्तर नहीं देते। आचार्य जी के बाद मेरा क्रम था। कुछ चर्चा करने के बाद मैंने बच्चों को प्रेरित किया कि किसी का कोई प्रश्न हो तो पूछें। एक छात्र ने प्रश्न किया कि ''श्री कृष्ण जी तो भगवान् थे, पर उन्हें भी तो हमारी ही तरह गुरुकुल में पढ़ना पड़ा था'' उस नन्हें बालक की जिज्ञासा स्पष्ट थी- ''भगवान् होकर भी कृष्ण जी को गुरुकुल में क्यों पढ़ना पड़ा?'' इससे साफ पता चलता है कि छात्रों के मन में प्रश्न है, वे सच्चाई जानना चाहते हैं। वे बाल-पिपासु अभी इतने समर्थ नहीं हैं कि स्वयं कूएँ तक जा सकें। अभी हमें ही जाकर पिपासा शान्त करनी होगी। कहीं ऐसा ना हो कि पानी के नाम पर उन्हें कुछ और पिला जाये और वह उसे ही पानी मान बैठें (जैसा कि आज तक हुआ है) या फिर प्यासे ही रह जायें। नहीं तो दुनिया को कोसने के लिये हमारे पास यही वाक्य होगा- ''जमाना बिगड़ गया है, अच्छी बातें तो कोई सुनता ही नहीं।'' अस्तु, उसी दिन शाम को राधागोविन्द मन्दिर में पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सत्यनारायण कथा का आयोजन था। कथा के बाद में पंडित जी (जो कि बड़े सरल स्वभाव के थे) से समय लेकर उपस्थित जनों को आर्य समाज व सभा का परिचय दिया। फिर कुछ समय आर्य समाज/वैदिक पद्धति के अनुसार ध्यान कराया। यहाँ पर अनेक लोगों से परिचय हुआ। ८७ वर्ष के एक सक्रिय व्यक्ति से भी भेंट हुई। उनसे पता चला कि पहले यहाँ पर कुछ लोग आर्य समाजी थे, जो कि यज्ञादि किया करते थे। आजादी के बाद जो क्रान्तिकारी यहीं रह गये उनमें अधिकतर आर्यसमाज की विचारधारा के लोग थे परन्तु उनके बाद आर्यसमाज का कार्य बन्द हो गया। क्योंकि समाज को संस्था के रूप में स्थापित नहीं किया और ना ही आने वाली पीढ़ी को ये विचार दिया गया। पर उनमें से किसी महानुभाव के सुपुत्र अब भी हैं जो आर्य समाज की विचारधारा को मानते हैं। ये सारी जानकारी हमारे लिये सूखे रेगिस्तान में पानी की खबर जैसी थी और वो एक व्यक्ति पानी थे जिन तक हमें पहुचँना था।

७ दिसम्बर रविवार को प्रात:काल रामकृष्ण मिशन के लिये निकल पड़े। जाते समय मैंने जो देखा वह अण्डमान की व्यवस्थाओं के प्रति लोगों की श्रद्धा को व्यक्त करता है। और शायद इसीलिये ये द्वीप सुन्दर और व्यवस्थित है। अपने निवास स्थान से कुछ दूर चलने पर हम समुद्र के किनारे सड़क पर आ गये। सुबह-सुबह लोग टहलने के लिये निकले थे। उन्हीं में एक दुर्बल वृद्ध व्यक्ति हमारे साथ चल रहा था। अचानक वह रुका और नीचे झुका। हम थोड़ा आगे निकल गये। मैंने पीछे मुड़कर देखा कि उस वृद्ध ने सड़क पर पड़ी पॉलिथीन उठाई ओर कचरे के ढ़ेर पर डाल दी। एक और घटना, जो वहाँ के कर्मचारियों की कार्य-निष्ठा पर प्रकाश डालती है। हमें शहर से दूर ग्रामीण बस्ती में जाना था। बस की प्रतीक्षा में खड़े थे। दो महिलायें सड़क साफ कर रही थीं। सड़क के किनारे लोहे के पाइप लगे थे। दूसरी तरफ घास थी। सामान्य रूप से ऐसे कर्मचारी सड़क का दूर से दिखाई देने वाला कचरा पास की नाली या घास में ठिकाने लगा देते हैं। पर उनमें से एक महिला ने घास में फंसी प्लास्टिक की बोतल देखी। बोतल हाथ की पहुँच से बाहर थी। उसने झाड़ू उठाई और ३-४ मिनट मेहनत करने के बाद उसे मुख्य धारा में मिला लिया। इससे कुछ प्रेरणा तो हमें भी ले ही लेनी चाहिये। (बालादपि सुभाषितम्)

रामकृष्ण मिशन पहुँचे। यहाँ भूमि-सम्पत्ती तो खूब है पर उसका सदुप्रयोग नहीं है। अनाथ बच्चों के नाम पर दान लेते हैं जबकि बच्चे सनाथ हैं। एक बच्चे से भोजन के बारे में पूछा तो पता चला कि यहाँ सप्ताह में छ: दिन माँस चलता है और एक दिन शाकाहार दिवस मनाया जाता है। हम जहाँ पर भोजन करते थे उसके सामने एक बड़ी सी (चिकन मीट शॉप) थी। एक दिन जब नाश्ता करके ढाबे से निकले तो देखा कि सामने मीट की दुकान से एक गेरुआ वस्त्रधारी और साथ में दो छात्र २५-३० किलो की दो बाल्टियाँ आटों में रखकर ले गये। ये रामकृष्ण मिशन के लोग थे। रसीले गुरु विवेकानन्द के एक गुण (मांसाहार) का तो ये पूर्ण पालन कर ही रहे थे। इतना होते हुये भी हम लोगों ने अपना दायित्व समझते हुये उनके छात्रों को दो रविवार का समय दिया।

पोर्ट ब्लेयर से २५ किमी. दूर मुशदाबादियों की एक बस्ती है- केडलगंज। स्वतन्त्रता संग्राम में जो लोग यहाँ कैदी के रूप में लाए गये थे ये उन्हीं के वंशज थे। अंग्रेजों के बाद ३ साल तक यहाँ जापानियों का कब्जा रहा। इन

thearyasamaj.org

तीन सालों में जो बर्बरता जापानी सैनिकों ने की वह अग्रेजों से चार कदम आगे थी। कारण बस इतना था कि जापानियों को ये क्रान्तिकारी अंग्रेजो के गुप्तचर लगते थे। कभी भी कोई भी सिपाही बस्ती में आता और महिलाओं के साथ अभद्रता करता। डर के मारे पूरा दिन इन्हें सपरिवार जंगल में रहना पड़ता था। बस रात को सोने के लिये आते थे। ये सारी घटनायें उस बस्ती के मुखिया ने बताई। दस दिन पहले जब हम ''फरारगंज'' गये तो रास्ते में यह बस्ती और साथ में छोटा-सा राम मन्दिर दिखा। फरारगंज में शिवमन्दिर है। साथ ही कोने में संतोषी माता जी भी संतोषपूर्वक रहती है, इसलिये बस्ती की महिलायें शुक्रवार को वहाँ भजनकीर्तन करती हैं। जाकर मन्दिर में थोड़ा विश्राम किया एक श्रीमान् जी जो कि मन्दिर की चाबी आदि रखते थे उनसे मन्दिर में शुक्रवार को यज्ञ-सत्संग करने का विचार रखा, और वापस आ गये। विचार-विचार ही रह गया, क्योंकि इस इलाके के सभी मन्दिरों के एक छत्र पण्डित जी ने अपने जजमानी चले जाने के डर से टांग अड़ा दी। आते समय दो-तीन कि.मी. पैदल चलने पर बारिश शुरु हो गयी। सड़क के किनारे बनी छोटी-सी बन्द दुकान में दो घण्टे बैठे रहे। थोड़े चने खाकर भोजन किया। ये चने हम हमेशा साथ रखते थे। एक-दो दिन बाद हम उस मन्दिर वाली मुरादाबस्ती में गये। मन्दिर में डेरा डाला। एक माता जी ने शर्बत पिलाया थोड़ा विश्राम किया और चने खाकर पेट भरा। मुखिया जी आये तो उनसे बात करके रविवार की शाम को यज्ञ-सत्संग निश्चित किया। अब ये पण्डित जी फिर टांग अडा रहे थे। इस बार मैंनें स्वयं फोन से समझाया कि भाई! हम लोग दक्षिणा नहीं लेगें और कुछ दिनों के लिये ही यहाँ आये हैं। पण्डित जी ने सन्तुष्ट होकर अनुमति प्रदान की और कहा कि हम बम्बू-फ्लैट के सांई मन्दिर में रहते हैं यहाँ भी सत्संग कर देना। रविवार शाम को घी-सामग्री आदि स्वयं खरीदकर ले गये। यज्ञ-सत्संग के साथ-साथ आर्य समाज - ऋषि दयानन्द का परिचय भी दिया। आगे दो गुरुवार को सांई मन्दिर में सत्संग किया। मन्दिर के मन्त्री जी का आग्रह था कि आगे भी आयें, पर समयाभाव के कारण हम नहीं जा सके।

**शेष भाग अगले अंक में.....**

## सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959**

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

thearyasamaj.org

# वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

## महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

## वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| ८८. | सौवर | ५.०० |
| ८९. | पारिभाषिक | २०.०० |
| ९०. | धातुपाठ | |
| ९१. | गणपाठ | २०.०० |
| ९२. | उणादिकोष | |
| ९३. | निघण्टु | १५.०० |
| ९४. | संस्कृतवाक्यप्रबोध | |
| ९५. | व्यवहारभानुः | १२.०० |
| ९६. | निरुक्त (मूल) | ८०.०० |
| ९७. | अष्टाध्यायी (मूल) | २०.०० |
| ९८. | अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द | १२०.०० |
| ९९. | अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द | १००.०० |
| १००. | अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द | १३०.०० |

### डॉ. भवानीलाल भारतीय

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| १०१. | महर्षि दयानन्द– आत्मकथा | |
| १०२. | उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन) | |
| १०३. | परोपकारिणी सभा का इतिहास | |
| १०४. | आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार | १०.०० |
| १०५. | आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा | ८.०० |
| १०६. | दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली | १५.०० |
| १०७. | देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा | ५.०० |
| १०८. | दयानन्द वचनामृत | ३.०० |
| १०९. | आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी | १०.०० |

### वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| ११०. | ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली | २०.०० |
| १११. | वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग | ३१.०० |
| ११२. | अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान | ३५.०० |
| ११३. | वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद | ३५.०० |
| ११४. | वेदों के आख्यान (प्रथम भाग) | ३५.०० |
| ११५. | वेदों के दार्शनिक विचार | ४०.०० |
| ११६. | सोम का वैदिक स्वरुप | ५०.०० |
| ११७. | पर्यावरण का वैदिक स्वरुप | |
| ११८. | वेद और समाज | |
| ११९. | वेद और राष्ट्र | |
| १२०. | वेद और विज्ञान | |
| १२१. | वेद और ज्योतिष | ८०.०० |
| १२२. | वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१) | ५०.०० |
| १२३. | वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२) | ५०.०० |
| १२४. | वेद और निरुक्त | १००.०० |
| १२५. | वेद और इतिहास | १००.०० |
| १२६. | वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान | १००.०० |
| १२७. | वेद और शिल्प | |
| १२८. | वेदों में अध्यात्म | |
| १२९. | वेदों में राजनैतिक विचार | १००.०० |
| १३०. | वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है | |
| १३१. | वैदिक समाज विज्ञान | |
| १३२. | सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद | |
| १३३. | सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद | |

### प्रो. धर्मवीर

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| १३४. | आर्यसमाज और शोध | १५.०० |
| १३५. | महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र | |

thearyasamaj.org

| क्रमांक नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|
| **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** | |
| १३६. ध्यान योग एवं रोग निवारण | १५०.०० |
| १३७. योग | ५०.०० |
| १३८. अष्टाङ्ग योग | २०.०० |
| १३९. समाधि | १००.०० |
| **स्वामी अभयानन्द सरस्वती** | |
| १४०. प्राणायाम चिकित्सा | |
| **डॉ. सत्यदेव आर्य** | |
| १४१. वैदिक सन्ध्या मीमांसा | २५.०० |
| १४२. ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन | २५.०० |
| १४३. तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन | २५.०० |
| **विरजानन्द दैवकरणि** | |
| १४४. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत | ८.०० |
| १४५. महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ | ५.०० |
| **वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी** | |
| १४६. बूंदी शास्त्रार्थ | ५.०० |
| १४७. वैदिक सूक्ति–सुमन | २५.०० |
| **वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ** | |
| १४८. दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट | ५५०.०० |
| १४९. आर्य समाज की मान्यताएं | २०.०० |
| १५०. मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र | १५.०० |
| १५१. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द) | २५.०० |
| १५२. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द | १५.०० |
| १५३. ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र) | ४.०० |
| १५४. ईशादिदशोपनिषद् (मूल) | १०.०० |
| १५५. वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला) | २५.०० |
| १५६. सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल | १०.०० |
| १५७. दयानन्द दिव्य दर्शन | १२.०० |
| १५८. वृक्षों में जीवात्मा | १०.०० |

| क्रमांक नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|
| १५९. महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश | ३.०० |
| १६०. महर्षि महिमा | २.०० |
| १६१. स्वामी दयानन्द चरितम् | १०.०० |
| १६२. ब्रह्माकुमारी मत खण्डन | ८.०० |
| १६३. निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष | ५.०० |
| १६४. मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान | १२.०० |
| १६५. नेपाली सत्यार्थ प्रकाश | २००.०० |
| १६६. परोपकारी विशेषांक | २५.०० |
| १६७. महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति) | ५०.०० |
| १६८. संगठन सूक्त | २.०० |
| १६९. ३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर | १००.०० |
| १७०. प्यारा ऋषि | २५.०० |
| १७१. नककटा चोर | ३०.०० |
| १७२. महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी | ३५.०० |
| १७३. स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य | ३५.०० |
| १७४. भगवान् को क्यों मानें ? | २५.०० |
| १७५. महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय | ३०.०० |
| १७६. आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती | २५.०० |
| १७७. शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़ | २५.०० |
| १७८. नैति मंजूषा | ९५०.०० |
| १७९. ऋग्वेदादि संदेश | ३०.०० |
| १८०. त्याग की धरोहर | १००.०० |

**ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)**

**(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)**

१८१. अष्टांग योग–१ (सी.डी.)

१८२. अष्टांग योग–२ (सी.डी.)

१८३. आसन (सी.डी.)

१८४. सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)

शेष भाग अगले अंक में.......

thearyasamaj.org

# ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे।

**- सम्पादक**

**पिछले अंक का शेष......**



**[illegible] में बिलखा बांमी,**
**हुयगा सबला जैन[१] बिरामी[२] ।**

१—हिन्दुओं के २४ अवतारों में जो ऋषभदेव हैं वे जैन-धर्म के प्रथम तीर्थङ्कर ( महान् पुरुष ) हैं और महावीर स्वामी अन्तिम ( २४ वें ) तीर्थंकर थे। वेद का "अहिंसा परमो धर्मः" वाक्य इस मत का मूल मंत्र है। इसके अधिक अनुयायी कभी नहीं हुए और न भारतवर्ष के बाहर इसका प्रचार हुआ। जर्मन विद्वान् डा० जैकोबी ने पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर को ही जैनधर्म का मूल जन्मदाता माना है जो ईसामसीह से पूर्व ८ वीं सदीमें हुए हैं। इसमें दिगम्बर और श्वेताम्बर दो सम्प्रदाय हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के स्थानकवासी ( बाईस टोला—ढूंढिया ) और तेरह पन्थी लोग मूर्ति को नहीं पूजते हैं। जब जैन यति ( साधु ) गृहस्थों के से कार्य करने लग गये तब अहमदाबाद के लूँकाशाह जैन ने उनमें से फटकर १५ वीं शताब्दी में यह बाईस टोला पंथ चलाया। इस शाखा के प्रचारक साधु २२ होने से ही यह नाम पड़ा है। इस पंथ के साधु मुँह पर मूँमती ( पट्टी ) बाँधे रहते हैं। इसी २२ टोला पंथ से अलग होकर सं० १८१७ आषाढ़ सुदि १५ शनिवार ( २८–६–१७६० ई० ) को कंटालिया के भीकमजी वैश्य ने यह तेरह पंथ चलाया है, जिसके उपदेश निराले ही हैं। ( देखो मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ सन् १८९१ ई० के वक्त में बना सरकारी "मारवाड़ की कौमों का इतिहास" तीसरा हिस्सा पृष्ठ २६० और जैन पथ प्रदर्शक पत्र वर्ष १२ संख्या ४० पृष्ठ ७ सन् १९३० ई० आगरा )। २—विश्राम।

thearyasamaj.org



आखातीजां घणीं असांमी,
सिद्ध जन्मियो शंकर[१] स्वामी ॥१२॥
वेद धर्म सद सुकन[२] बतायो,
अमल[३] नयो वेदान्त अचायो।
प्रीत नीत गलवांणी[४] पायो,
खण्डण जैन खीचड़ो[५] खायो ॥१३॥
शंकर वेगो[६] गयो सिधाई,
परजा दुखी घणीं पिछताई।
मारग लूवाँ[७] लपट मचाई,
अब ऊपर तिस[८] मारी आई ॥१४॥
तपै सूम अम्मर[९] हुय ताता[१०],
सुरझाई भगती पितु माता।
वार्गा[११] झाट[१२] पिछम दिस बाता,
वंक[१३] हुवो सब देस विधाता ॥१५॥

१—इनका जन्म दक्षिण के जिला मालाबार के गाँव कालपी में वि० सं० ८४४ ( स० ७८७ ई० ) में नाम्बूद्री ब्राह्मण कुल में हुआ था। बड़े बड़े उत्कट जैन व बौद्ध विद्वान इनकी विद्वत्ता के सामने न ठहर सके और चारों तरफ वैदिक धर्म गूंज उठा। सं० ८७६ विक्रमी में केदारनाथ पर्वत के समीप ३२ वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास हुआ। २—शकुन, वर्ष का भविष्य देखना। ३—अफीम। ४—गुड़ की राब। ५—खिचड़ी। ६—जल्दी। ७—लूएँ, गर्म लू। ८—प्यास। ९—आकाश। १०—गर्म। ११—चली। १२—...। १३—उल्टा।

thearyasamaj.org



नर[१] घर सूका नदी तड़ागा,
लाज धर्म विद्या मग लागा।
आरज[२] हंसा उडग्या आगा[३],
कपटी दादर[४] रहगा कागा[५] ॥१६॥

संप[६] सु झरणां गया सुकाई,
लोक लोक सुभरीत लुकाई।
झप्प अंगमल अम्ब झुकाई,
कोचर[७] कंठ कुसम्प कुकाई ॥१७॥

सील सन्तोष शूरता सारा,
तूटण लग दिवस में तारा।
खूटा नीर निवांणां[८] खारा,
चोपायां घर मिले न चारा ॥१८॥

भूमि मांझ धसगो जस भोगी,
साच सु हस्ती मसके सोगी।
दांन ऊँट रे लागी दोगी,[९]
जांण अजांण सोइ थाको जोगी ॥१९॥

जाचक हिरण तिसाया[१०] जावे,
पुन्न नीर सुपनें नहिं पावे।

---

१—वृक्ष। २—आर्य्य धर्म्म (वैदिक)। ३—दूर। ४—मैंढक। ५—कौआ। ६—मेल, एकता। ७—पक्षी विशेष जो उल्लू के बच्चे जैसा होता है। ८—जलाशय। ९—पीड़ा। १०—प्यासे। ... आ

thearyasamaj.org



घर जिग्यासू दस दिस धावे,
मृग त्रिसणां गुरु लख मुरझावे ॥२०॥
चौर गुरू बिच्छू चटकावे,
ग्यांन राब[1] बिरला गटकावे।
भेक श्राद्ध कारण भटकावे,
लुचा वागल[2] ज्यूँ लटकावे ॥२१॥
पंखें सम सज्जन कोई पावे,
हेत प्रीत सोई पवन हलावे।
छिमा गुलाब नीर छिड़कावे,
पितु वट[3] छाया कोईक पावे ॥२२॥
सन्त संगत सुर बाग सुकायो,
मिले कहूँ बलियो[4] मुरझायो।
ठंडो जल नहिं ठरे ठरायो,
भूले ज्ञांन सुण्यों मन भायो ॥२३॥
आई उमड अविद्या आंधी,
च्यार वर्ण चडगी चख चांधी।
बिरछा[5] धजा तूटगी बांधी,
सदाचार री सँधे न सांधी[6] ॥२४॥

१—खड़ी २—एक पक्षी जो उल्टा लटकता है। ३—बरगद वृक्ष। ४—जला हुआ। ५—वृक्ष। ६—जोड़ी हुई।

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

# जिज्ञासा समाधान - ८३

- आचार्य सोमदेव

**जिज्ञासा १**- मैं परोपकारी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। जिज्ञासा समाधान नियमित पढ़ता हूँ। आप का समाधान मुझे बहुत सन्तुष्ट करता है। मेरी एक शंका है कृपया आप विस्तार से समझाइएगा।

**प्रश्न है**- मृत्यु के बाद आत्मा दूसरा शरीर कितने दिनों के अन्दर धारण करता है? किन-किन योनियों में प्रवेश करता है? क्या मनुष्य की आत्मा पशु-पक्षियों की योनियों में जन्म लेने के बाद फिर लौट के मनुष्य योनियों में बनने का कितना समय लगता है? आत्मा माता-पिता के द्वारा गर्भधारण करने से शरीर धारण करता है यह मालूम है लेकिन आधुनिक पद्धतियों के द्वारा टेस्ट ट्यूब बेबी, सरोगसि पद्धति, गर्भधारण पद्धति, स्पर्म बैंकिंग पद्धति आदि में आत्मा उतने दिनों तक स्टोर किया जाता है क्या? यह सारा विवरण परोपकारी में बताने का कष्ट करें।

**- एन. रणवीर, नलगोंडा, तेलंगाना**

**समाधान १**- मृत्यु के बाद आत्मा कब शरीर धारण करता है, इसका ठीक-ठीक ज्ञान तो परमेश्वर को है। किन्तु जैसा कुछ ज्ञान हमें शास्त्रों से प्राप्त होता है वैसा यहाँ लिखते हैं। बृहदारण्यक-उपनिषद् में मृत्यु व अन्य शरीर धारण करने का वर्णन मिलता है। वर्तमान शरीर को छोड़कर अन्य शरीर प्राप्ति में कितना समय लगता है, इस विषय में उपनिषद् ने कहा-

**तद्यथा तृणजलायुका तृणस्यान्तं**
**गत्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मानम्**
**उपसंहरत्येवमेवायमात्मेदं शरीरं निहत्याऽविद्यां**
**गमयित्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्य् आत्मानमुपसंहरति।।**

- बृ. ४.४.३

जैसे तृण जलायुका (सुंडी=कोई कीड़ा विशेष) तिनके के अन्त पर पहुँच कर, दूसरे तिनके को सहारे के लिए पकड़ लेती है अथवा पकड़ कर अपने आपको खींच लेती है, इसी प्रकार यह आत्मा इस शरीररूपी तिनके को परे फेंक कर अविद्या को दूर कर, दूसरे शरीर रूपी तिनके का सहारा लेकर अपने आपको खींच लेता है। यहाँ उपनिषद् संकेत कर रहा है कि मृत्यु के बाद दूसरा शरीर प्राप्त होने में इतना ही समय लगता है, जितना कि एक कीड़ा एक तिनके से दूसरे तिनके पर जाता है अर्थात् दूसरा शरीर प्राप्त होने में कुछ ही क्षण लगते हैं, कुछ ही क्षणों में आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाता है। आपने पूछा है- आत्मा कितने दिनों में दूसरा शरीर धारण कर लेता है, यहाँ शास्त्र दिनों की बात नहीं कर रहा कुछ क्षण की ही बात कह रहा है।

मृत्यु के विषय में उपनिषद् ने कुछ विस्तार से बताया है, उसका भी हम यहाँ वर्णन करते हैं-

**स यत्रायमात्माऽबल्यं न्येत्यसंमोहमिव न्येत्यथैनमेते**
**प्राणा अभिसमायन्ति स एतास्तेजोमात्राः**
**समभ्याददानो हृदयमेवान्ववक्रामति स यत्रैष चाक्षुषः**
**पुरुषः पराङ् पर्यावर्ततेऽथारूपज्ञो भवति।।**

- बृ. उ.४.४.१

अर्थात् जब मनुष्य अन्त समय में निर्बलता से मूर्छित-सा हो जाता है, तब आत्मा की चेतना शक्ति जो समस्त बाहर और भीतर की इन्द्रियों में फैली हुई रहती है, उसे सिकोड़ती हुई हृदय में पहुँचती है, जहाँ वह उसकी समस्त शक्ति इकट्ठी हो जाती है। इन शक्तियों के सिकोड़ लेने का इन्द्रियों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन करते हैं कि जब आँख से वह चेतनामय शक्ति जिसे यहाँ पर चाक्षुष पुरुष कहा है, वह निकल जाती तब आँखें ज्योति रहित हो जाती है और मनुष्य उस मृत्यु समय किसी को देखने अथवा पहचानने में अयोग्य हो जाता है।

**एकीभवति न पश्यतीत्याहुरेकी भवति, न जिघ्रतीत्याहुरेकी भवति, न रसयत इत्याहुरेकी भवति, न वदतीत्याहुरेकी भवति, न शृणोतीत्याहुरेकी भवति, न मनुत इत्याहुरेकी भवति, न स्पृशतीत्याहुरेकी भवति, न विजानातीत्याहुस्तस्य हैतस्य हृदयस्याग्रं प्रद्योतते तेन प्रद्योतेनैष आत्मा निष्क्रामति चक्षुष्टो वा मूर्ध्नो वाऽन्येभ्यो वा शरीरदेशेभ्यस्तमुत्क्रामन्तं प्राणोऽनूत्क्रामति प्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वे प्राणा अनूत्क्रामन्ति सविज्ञानो भवति, सविज्ञानमेवान्ववक्रामति तं विद्याकर्मणी**

thearyasamaj.org

समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च।।

- बृ.उ. ४.४.२

अर्थात् जब वह चेतनामय शक्ति आँख, नाक,जिह्वा, वाणी, श्रोत्र, मन और त्वचा आदि से निकलकर आत्मा में समाविष्ट हो जाती है, तो ऐसे मरने वाले व्यक्ति के पास बैठे हुए लोग कहते हैं कि अब वह यह नहीं देखता, नहीं सूँघता इत्यादि। इस प्रकार इन समस्त शक्तियों को लेकर यह जीव हृदय में पहुँचता है और जब हृदय को छोड़ना चाहता है तो आत्मा की ज्योति से हृदय का अग्रभाग प्रकाशित हो उठता है। तब हृदय से भी उस ज्योति चेतना की शक्ति को लेकर, उसके साथ हृदय से निकल जाता है। हृदय से निकलकर वह जीवन शरीर के किस भाग में से निकला करता है, इस सम्बन्ध में कहते है कि वह आँख, मूर्धा अथवा शरीर के अन्य भागों-कान, नाक और मुँह आदि किसी एक स्थान से निकला करता है। इस प्रकार शरीर से निकलने वाले जीव के साथ प्राण और समस्त इन्द्रियाँ भी निकल जाया करती हैं। जीव मरते समय 'सविज्ञान' हो जाता है अर्थात् जीवन का सारा खेल इसके सामने आ जाता है। इसप्रकार निकलने वाले जीव के साथ उसका उपार्जित ज्ञान, उसके किये कर्म और पिछले जन्मों के संस्कार, वासना और स्मृति जाया करती है।

इस प्रकार से उपनिषद् ने मृत्यु का वर्णन किया है। अर्थात् जिस शरीर में जीव रह रहा था उस शरीर से पृथक् होना मृत्यु है। उस मृत्यु समय में जीव के साथ उसका सूक्ष्म शरीर भी रहता, सूक्ष्म शरीर भी निकलता है।

आपने पूछा किन-किन योनियों में प्रवेश करता है, इसका उत्तर है जिन-जिन योनियों के कर्म जीव के साथ होते हैं उन-उन योनियों में जीव जाता है। यह वैदिक सिद्धान्त है, यही सिद्धान्त युक्ति तर्क से भी सिद्ध है। इस वेद, शास्त्र, युक्ति, तर्क से सिद्ध सिद्धान्त को भारत में एक सम्प्रदाय रूप में उभर रहा समूह, जो दिखने में हिन्दू किन्तु आदतों से ईसाई, वेदशास्त्र, इतिहास का घोर शत्रु ब्रह्माकुमारी नाम का संगठन है। वह इस शास्त्र प्रतिपादित सिद्धान्त को न मान यह कहता है कि मनुष्य की आत्मा सदा मनुष्य का ही जन्म लेता है, इसी प्रकार अन्य का आत्मा अन्य शरीर में जन्म लेता है। ये ब्रह्माकुमारी समूह यह कहते हुए पूरे कर्म फल सिद्धान्त को ताक पर रख देता है। यह भूल जाता है कि जिसने घोर पाप कर्म किये हैं वह इन पाप कर्मों का फल इस मनुष्य शरीर में भोग ही नहीं सकता, इन पाप कर्मों को भोगने के लिए जीव को अन्य शरीरों में जाना पड़ता है। वेद कहता है-

**असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।**
**ताँऽस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।**

- यजु. ४०.३

इस मन्त्र का भाव यही है कि जो आत्मघाती=घोर पाप कर्म करने वाले जन है वे मरकर घोर अन्धकार युक्त=दुःखयुक्त तिर्यक योनियों को प्राप्त होते हैं। ऐसे-ऐसे वेद के अनेकों मन्त्र हैं जो इस प्रकार के कर्मफल को दर्शाते हैं। किन्तु इन ब्रह्माकुमारी वालों को वेद शास्त्र से कोई लेना-देना नहीं है। ये तो अपनी निराधार काल्पनिक वाग्जाल व भौतिक ऐश्वर्य के द्वारा भोले लोगों को अपने जाल में फँसा अपनी संख्या बढ़ाने में लगे हैं। अस्तु।

इस विषय में हम अपनी बात न कहकर, जो कुछ महर्षि दयानन्द ने लिखा है उसको यहाँ लिखते हैं-

**प्रश्न**- मनुष्य का जीव पश्वादि में और पश्वादि का मनुष्य के शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में आता-जाता है वा नहीं।

**उत्तर**- हाँ, जाता-आता है, जब पाप बढ़ जाता पुण्य न्यून होता है, तब मनुष्य का जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता है और जब पुण्य पाप बराबर होता है, तब साधारण मनुष्य जन्म होता है। इनमें भी पाप पुण्य के उत्तम मध्यम निकृष्ट होने से मनुष्यादि में भी उत्तम, मध्यम, निकृष्ट शरीरादि सामग्री वाले होते हैं और जब अधिक पाप का फल पश्वादि के शरीर में भोग लिया है, पुनः पाप पुण्य के तुल्य रहने से मनुष्य शरीर में आता और पुण्य के फल भोगकर भी मध्यस्थ मनुष्य के शरीर में आता है, जब शरीर छोड़ता है तब यमालय अर्थात् अकाशस्थ वायु में रहता है। क्योंकि '**यमेन वायुना**' वेद में लिखा है कि यम नाम वायु का है, गरुड़ पुराण का कल्पित यम नहीं।......पश्चात् धर्मराज अर्थात् परमेश्वर उस जीव के पाप पुण्यानुसार जन्म देता है। वह वायु, अन्न, जल अथवा

thearyasamaj.org
शरीर के छिद्र द्वारा दूसरे के शरीर में ईश्वर की प्रेरणा से प्रविष्ट होता है। जो प्रविष्ट हो वीर्य में जा, गर्भ में स्थित हो, शरीर धारण कर बाहर आता है, जो स्त्री के शरीर धारण करने योग्य कर्म हों तो स्त्री और पुरुष के योग्य कर्म हों तो पुरुष के शरीर में प्रवेश करता है और नपुंसक गर्भ की स्थिति के समय स्त्री-पुरुष के शरीर में सम्बन्ध करके रजवीर्य के बराबर होने से होता है। इसी प्रकार नाना प्रकार के जन्म-मरण में तबतक जीव पड़ा रहता है कि जबतक कर्मोपासना ज्ञान को करके मुक्ति को नहीं पाता। क्योंकि उत्तम कर्मादि करने से मनुष्यों में उत्तम जन्म और मुक्ति में महाकल्प पर्यन्त जन्म-मरण दु:खों से रहित होकर आनन्द में रहता है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास-९) महर्षि के इन वचनों से आपके प्रश्न कि **मनुष्य का आत्मा किन योनियों में प्रवेश करता है, क्या अन्य योनियों से मनुष्य योनि में आता है, मनुष्य योनि में आने में कितना समय लगता है?** इनका उत्तर आ गया है।

आपने जो अन्तिम बात पूछी कि आधुनिक पद्धति **द्वारा टेस्ट ट्यूब बेबी से बच्चा पैदा करते हैं तो क्या वहाँ** आत्मा रहता है, इसका उत्तर है कि हाँ, वहाँ आत्मा रहता है। क्योंकि बच्चा उत्पन्न करने के लिए रज-वीर्य का संयोग चाहिए जब-जब रज वीर्य का विधिवत् ठीक-ठीक संयोग का समय होगा तो वहाँ परमेश्वर की व्यवस्था से संयोग समय नये शरीर के लिए आत्मा आयेगा। इसलिए उस टेस्ट ट्यूब बेबी में भी रज-वीर्य को संयुक्त करके रखा जाता इस कारण वहाँ आत्मा रहता है जिससे एक नवीन शरीर का निर्माण होता है। ऐसा ही कृत्रिम गर्भधारण में समझें। रही बात स्पर्म बैंकिंग की तो वहाँ स्टोर किये वीर्य में शरीर धारण करने वाला आत्मा नहीं रहता। शरीर धारण करने वाला आत्मा तो जैसा हमने ऊपर कहा कि जब-जब रज वीर्य यथावत् मिलेंगे वहाँ जीव परमेश्वर की व्यवस्था से आयेगा। इत्यलम्।

**जिज्ञासा २**- मेरे मन में एक छोटी-सी शंका है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के आगे स्वामी और बाद में सरस्वती क्यों लगाते थे स्वामी जी! उस का अर्थ क्या है? हमें बताईएगा।

सत्यार्थप्रकाश उर्दू में परोपकारिणी सभा से मिल सकता है क्या कृपया परोपकारी पत्रिका में बताया नहीं जा रहा है।

**- एन. रणवीर, नलगोंडा, तेलंगाना**

**समाधान-२** स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आगे तो स्वामी इसलिए लगाते हैं क्योंकि वे संन्यासी थे, संन्यासी के लिए यह शब्द आदर के लिए लगाया जाता है। यह शब्द संन्यासी के लिए रुढ़ सा हो गया है। इसका अर्थ स्वत्वाधिकारी होता है अर्थात् अपने आपका अधिकारी चूंकि संन्यासी स्वत्वाधिकारी होता है इसलिए उनके नाम के आगे स्वामी लगाते हैं। स्वामी का एक अर्थ उच्च कोटि का धार्मिक पुरुष होता है।

दूसरी सरस्वती लगाने वाली बात- आचार्य शंकर से दस नामी संन्यासियों की परम्परा चली आयी है उनमें से एक सरस्वती भी है। स्वामी दयानन्द जी ने सरस्वती परम्परा वाले संन्यासी से संन्यास दीक्षा ग्रहण की थी, इसलिए संन्यास गुरु परम्परा अनुसार स्वामी दयानन्द के पीछे (सरस्वती) लग गया। इस सरस्वती शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में दिया है-

**सरो विविधं ज्ञानं विद्यते यस्यां चित्तौ सा सरस्वती।**

जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत होवे उसको सरस्वती कहते हैं। विद्या, वाणी आदि का नाम भी सरस्वती है। ऊर्दू में सत्यार्थ प्रकाश अभी सभा के बिक्री विभाग में नहीं, आगे सम्भावना है कि उपलब्ध हो जाये।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

## अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।**

**सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।**

***प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ***- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

### अतिथि यज्ञ के होता

### ( १६ से २८ फरवरी २०१५ तक )

१. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली २. श्री अशोक गुप्ता, दिल्ली ३. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ४. श्री ईश्वर दयाल माथुर, जयपुर, राज. ५. श्री वेदप्रकाश आर्य, रोजड़, गुज. ६. श्री विश्वमुनि, ज्वालापुर ७. श्री छोटूलाल, बरेली ८. श्री किशोरचन्द्र महापात्र, ओड़िशा ९. श्रीमती विमला गुलाटी, दिल्ली १०. श्री अवनीश कपूर, दिल्ली ११. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली १२. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली १३. श्रीमती कमला पाण्डव, पटियाला, पंजाब १४. श्री टी.के. घोष, गुड़गाँव, हरि. १५. श्री देवमुनि, अजमेर १६. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

### गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवां को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

### ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

### ( १६ से २८ फरवरी २०१५ तक )

१. सुश्री पूर्वा आर्या, अजमेर २. श्रीमती किरण बजाज, अजमेर ३. श्रीमती कौशल्या देवी, अजमेर ४. श्रीमती मंजू देवी, अजमेर ५. श्रीमती शीला देवी, अजमेर ६. श्रीमती चम्पा शर्मा, अजमेर ७. श्री सर्वदयाल गानोत्रा, अजमेर ८. श्रीमती विमला गुलाटी, दिल्ली ९. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केण्ट, पंजाब १०. सुश्री उन्नति अरोड़ा, जयपुर, राज. ११. श्री किशनचन्द, गुड़गाँव, हरि. १२. श्री टी.के. घोष, गुड़गाँव, हरि. १३. श्री नरेन्द्र सैनी, रोहतक, हरि. १४. श्री लक्ष्मीनारायण, दिल्ली १५. श्री विजयपाल सैनी, सोनीपत, हरि. १६. श्री ओमप्रकाश होडाल, हरि. १७. श्री बलवन्तसिंह सैनी, गुड़गाँव, हरि. १८. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १९. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

---

# पुस्तक - समीक्षा

**पुस्तक का नाम** - दृष्टान्त समुच्चय
**लेखक** - पं. शिव शर्मा उपदेशक
**प्रकाशक** - विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६
**मूल्य** - १२५/- रु. **पृष्ठ संख्या** - २४३

हमारे समाज में ज्ञानार्जन कराने वाले लेखक एवं वक्ता अपने-अपने गुर एवं सिद्धान्तों को विभिन्न पद्धतियों से समझाते हैं। पद्धति यदि पाठक एवं श्रोता के अनुरूप होती हैं तो प्रभाव पड़ता है अन्यथा बात आई-गई हो जाती है। वक्ता व श्रोता का तारतम्य तभी जुड़ता है जब वक्ता के कथन में आकर्षण एवं सारगर्भित बात हो। विद्वानों के प्रवचन होते हैं, उसमें भाषा की सरलता एवं प्रभावोत्पादकता ही न हो तो श्रोता का ध्यान यत्र-तत्र चला जाता है। प्राचीन काल में मातायें, दादियाँ बच्चों को ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ सुनाया करती थीं, बच्चे उन्हें आत्मसात् कर लेते थे एवं गहरी निद्रा में सोते थे। इसी प्रकार आज के मशीनीकरण के युग में ईश्वर, ज्ञान, चरित्र एवं अन्यान्य विषयों को यदि दृष्टान्तों के माध्यम से बताया जाये तो एकाग्रता से वह सब ग्राह्य हो जाता है। प्रश्नानुकूल उत्तर भी सम्भव हो जाता है। दृष्टान्त के माध्यम से जिज्ञासा बढ़ती है, फिर चाहे वह किसी आयु वर्ग का क्यों न हो। लेखक पं. शिव शर्मा का ध्येय भी यही है, इसी आधार पर उन्होंने 'दृष्टान्त समुच्चय' में पाठकों के लिए १९५ दृष्टान्त प्रस्तुत किए हैं। सभी दृष्टान्त अनुकरणीय, हृदयग्राही हैं। पाठकों से निवेदन है कि इसका अवश्यमेव रसास्वादन करें, जिससे जीवन में नया मोड़ आए। **-देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर**

thearyasamaj.org

# स्तुता मया वरदा वेदमाता-५

वेद कहता है हमारे अन्दर एक दूसरे के प्रति चाहना हो। परस्पर अभिलाषा होनी चाहिए। यह जो मानसिक परिस्थित है, इसका मन में विचार होने की भूमिका बन चुकी है, मनुष्य के मन में जब द्वेष नहीं होता, सहानुभूति का भाव किसी के प्रति अनुकूलता का लक्षण है। इस भाव की अधिकता ही अपनेपन को जन्म देती है। अपनापन स्वाभाविकता को बताता है। यदि हमारे मन में किसी के प्रति द्वेष नहीं है तो हम उसके कष्ट को देखकर उसे यह कष्ट क्यों मिल रहा है, इस प्रकार का दु:ख उसको नहीं मिलना चाहिए इस प्रकार का विचार मन में आता है। अपनापन दूसरे के प्रति मन में निकटता का भाव उत्पन्न करता है। इस निकटता से उत्पन्न प्रसन्नता का विचार प्रेम को प्रकाशित करता है। समाज में जब कोई हमारे साथ सद्‌भाव दिखाता है तो हमें भी उसके प्रति सद्‌भाव प्रदर्शित करने की इच्छा होती है। सद्‌भाव की अधिकता होने पर दूसरे से उसकी अपेक्षा नहीं रहती, हमें वस्तु अच्छी लगती है। दूसरे व्यक्ति में सम्भव है जो भाव हमारे मन में है, वह न हो, या उतना न हो तब भी हम अपना सम्पूर्ण अपनापन देते हैं तो दूसरे पक्ष से कई बार उसप्रकार की अपेक्षा भी नहीं रहती। वेद कहता है प्रेम की आकांक्षा दोनों ओर से होनी चाहिए। इसलिए मन्त्र कहता है **अन्योऽन्यमभिहर्यत**- परिवार के सदस्यों में एक दूसरे के हित की चिन्ता होनी चाहिए। हम समुदाय में रहते हुए यदि अपने लाभ या अपने हित की बात ही सोचते हैं, सदा अपनी ही चिन्ता करते हैं तो स्वाभाविक रूप से यह मान लिया जाता है अब आपकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। जब कोई असमर्थ होता है तो उसकी चिन्ता की जाती है, उसके चाहने वाले उसका ध्यान रखते हैं। जब हमें लगता है यह व्यक्ति स्वयं अपना भला कर सकता है, अपना हित साध सकता है तब किसी के लिए उसके विषय में सोचना प्राथमिकता नहीं रहती। और हाँ सब अपना अपना सोचेंगे तो फिर वहाँ कोई दूसरे के बारे में क्यों सोचेगा?

अपने बारे में सोचना अपना हित चाहना बुरी बात नहीं है। यहाँ अनुचित तब होता है जब मनुष्य अपने बारे में सोचता है तब उसे दूसरे की चिन्ता नहीं होती या वह दूसरे की उपेक्षा कर देता है। अपनी चिन्ता करते हुए केवल अपनी ही चिन्ता होती है, दूसरे की चिन्ता नितान्त नहीं होती हैं। जब हम अपने को मुख्य न मानकर दूसरे की चिन्ता करते हैं, ऐसा सभी करते हैं तो सब सब की चिन्ता कर सकते हैं। अपनी चिन्ता में सब सम्मिलित नहीं हो सकते परन्तु एक-एक औरों की चिन्ता करे तो सबको सबकी चिन्ता हो जाती है। यह लाभ सबमें प्रेम भाव होने पर होता है। परिवार में सबको अपने तुल्य हानि-लाभ, सुख-दु:ख आदि की चिन्ता करनी चाहिए। इसी से सबमें परस्पर प्रीति बढ़ती है।

वेद मन्त्र में एक उपमा दी है **वत्सं जातमिवाघ्न्या**- जैसा एक गाय अपने सद्य जात बछड़े से करती है वेद में जो उपमायें दी गई वे स्वाभाविक हैं। संसार के पदार्थों में, व्यक्तियों के व्यवहार में सदा ही उन्हें देखा जा सकता है। सब उसे अनुभव कर सकते हैं। वेद कहता है हमें गति करनी चाहिए सूर्य और चन्द्र की भाँति। भगवान् ने सृष्टि कैसे बनाई, संसार की रचना कैसे की, वेद कहता है- **यथापूर्वमकल्पयत्** जैसे प्रत्येक सर्ग में ईश्वर सृष्टि की रचना करता है उसी प्रकार रचना करता रहेगा। यहाँ भी प्रेम कैसा करना चाहिए जैसे एक गाय अपने सद्य जात बछड़े से करती है। गाय बछड़े से प्रेम करती है परन्तु उसका प्रेम तभी तक रहता है जब तक उसका बछड़ा असमर्थ होता है, अपनी माँ पर निर्भर होता है। जैसे ही बछड़ा बड़ा हो जाता है, गाय में उसप्रकार का प्रेम नहीं रहता। यह उपमा सम्भवत: इस बात को स्पष्ट करने के लिए है जब कोई प्राणी, या मनुष्य समर्थ हो जाता है तब उसके साथ उसप्रकार का सहयोग अपेक्षित नहीं होता। इसलिए प्रेम में केवल भावना नहीं औचित्य भी अपेक्षित है।

इसप्रकार इस मन्त्र में अपने व्यवहार को सुधारने के लिए मनुष्य को, अपने परिवार को प्रसन्न व सुखी रखने के लिए परस्पर द्वेष का न होना, एक दूसरे के सुख-दु:ख को स्वात्मवत् समझना। परस्पर प्रसन्नता के लिए यत्न करना और प्रत्येक सदस्य में परिवार के सदस्यों के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने वाला वार्तालाप और व्यवहार करते रहना चाहिए। इसलिए मन्त्र में-

**अविद्वेषम् सहृदयम्, सामनस्यम्** के साथ **अभिहर्यत** कहा है।

**क्रमश: .......**

thearyasamaj.org

# संस्था - समाचार

**१६ से २८ फरवरी २०१५**

परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से सभा की सभी गतिविधियाँ यथा- प्रात: सायं यज्ञ, प्रवचन, गुरुकुल संचालन, अतिथियों-आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार कार्यक्रम पिछले दिनों भी यथावत चलती रही।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** वैदिक सूक्तों की व्याख्या करते रहे। इस क्रम में सम्बन्धित अनेक विषयों की दृष्टान्त सहित व्याख्या भी होती रही। जैसे **'यज्ञ'** की महत्ता स्पष्ट करते हुए आपने बताया कि व्यक्ति जहाँ रहता है, अपने दायरे की हर वस्तु की चिन्ता करता है। अपने से जुड़ी हर वस्तु की शुद्धि की चिन्ता करता है। व्यक्ति के लिए नहाना जरूरी है, कपड़े धोना जरूरी है, झाडू लगाना जरूरी है अर्थात् वह स्थान, वस्तु, वस्त्र, पात्र से लेकर वायु, जल तक की शुद्धि चाहता है। जहाँ ऋषियों ने प्राचीन समय से ही वायु, जल आदि की शुद्धि के लिए यज्ञ का विधान किया है और उसे धर्म के साथ जोड़ा है वहीं आज हम वायु जल की शुद्धि के लिए नित-नए प्रक्रम अपनाते जा रहे हैं जल शुद्धि के लिए आज हम आर.ओ. जैसे आधुनिक यन्त्रों का प्रयोग करते हैं, बोतल बन्द पानी पीकर अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं। लेकिन इन्हीं दिनों प्रसिद्ध भारतीय अनुसन्धान केन्द्र- भाभा परमाणु अनुसन्धान संस्थान ने अपने लम्बे प्रयोग के बाद निष्कर्ष दिया कि जितने भी बोतलबन्द पानी हैं ये मनुष्यों में कैंसर करने वाले हैं लेकिन इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आकर्षण चाहने वाली सूचना तन्त्र प्रणाली (मीडिया तन्त्र) को इन खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। आजकल हम हवा को शुद्ध करने के भी कई प्रक्रम करते हैं, कोई सुगन्धित टिकिया रख देते हैं, अगरबत्ती जला देते हैं, इससे हवा की गन्ध तो बदल जाती है, लेकिन वह लाभकर होगी या अलाभकर होगी, इसका पता नहीं। कई बार अज्ञान में भी गड़बड़ी होती है। हमारे लोग वायु को सुगन्धित करने के लिए कई सारी अगरबत्तियाँ जलाते हैं लेकिन आजकल की इन अगरबत्तियों में अगर (वानस्पतिक द्रव्य) तो होता ही नहीं है। इनमें रसायन का प्रयोग होता है। चूँकि इसमें रसायन होता है तो यह नुकसान ही करेगा, हम इससे लाभ की अपेक्षा नहीं रख सकते और शोध भी यही बताते हैं कि इन आधुनिक (रासायनिक) अगरबत्तियों से कैंसर होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसी तरह धर्म के नाम पर, श्रद्धा के नाम पर मोमबत्तियाँ जलाई जाती है। वस्तुत: मोम तो मधुमक्खियाँ बनाती हैं जो कि एक जान्तव्य द्रव्य है। हो सकता है कि इस मोम से बनी मोमबत्तियों को जलाने से लाभ होता हो लेकिन आजकल जो मोमबत्ती बनाई जाती है, वह पेट्रोलियम (क्रूड ऑयल) के द्वारा बनने वाले १२६ पदार्थों में से एक के द्वारा बनाई जाती है। इस मोमबत्ती से कितनी सुगन्ध आ सकती है, जितनी गाड़ी में डीजल फूंकने में आएगी? या घर में रसोई गैस में खाना पकाने में आएगी? या जितनी कैरोसिन की चिमनी को जलाने में आएगी? यदि वाहन में पेट्रौल, डीजल जलाने से, घर में रसोई गैस में खाना पकाने से, चिमनी में कैरोसिन जलाने से यदि वायु शुद्ध होती हो तो मोमबत्ती जलाने से भी वायु शुद्ध हो जाएगी! निश्चित तौर पर पैट्रोल, डीजल, एल.पी.जी. कैरोसिन के जलने पर वायु प्रदूषित ही होती है और मोमबत्ती जलाने पर भी वायु प्रदूषित ही होगी, क्योंकि ये सभी एक ही मूल पदार्थ के उत्पाद हैं। हमारे यहाँ खुशी के अवसर पर, धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर घी जलाया जाता है, घी पुष्टिकारक पदार्थ है, चाहे घी खाओ, चाहे जलाओ, यह दोनों ही स्थितियों में लाभ पहुँचाएगा, लेकिन डीजल, पेट्रौल जैसे खनिजों के साथ यह बात नहीं है। इस प्रकार आपको यज्ञ के द्वारा शुद्ध करने में तथा दूसरे साधनों से शुद्ध करने का अन्तर पता चल जाएगा। पाश्चात्य परम्परा और प्राचीन भारतीय परम्परा का जो मौलिक अन्तर है, वह यह कि पाश्चात्य परम्परा में जो भी कार्य किया जाता है वह प्राय: वर्तमान को ध्यान में रखकर किया जाता है लेकिन इसके विपरीत प्राचीन भारतीय परम्परा में ऋषि जो कार्य करते या करवाते हैं वह न केवल वर्तमान की दृष्टि से बल्कि भविष्य की दृष्टि से भी ठीक होता है। हमको भी लाभ होना चाहिए और परिणाम में भी लाभ होना चाहिए यही धर्म की परिभाषा है। धर्म और अधर्म में मौलिक अन्तर भी यही है कि जहाँ अधर्म में औरों को तो हानि होती ही है और स्वयं को होने वाला लाभ भी थोड़ी देर के लिए ही होता है, वहाँ धर्म में इसके विपरीत मुझे भी

thearyasamaj.org

दीर्घकाल के लिए लाभ होता है और औरों को भी लाभ ही होता है। इसलिए ऋषियों ने यज्ञ को धर्म के साथ जोड़ दिया। यज्ञ प्रसन्नता के अवसर पर किया जाता है और प्रसन्नता को देने वाला है, क्योंकि मनुष्य दुर्गन्ध से, मलिनता से, गन्दगी से स्वाभाविक रूप से दु:खी होता है और स्वच्छता से, सुगन्ध से प्रसन्न होता है। यज्ञ वायु, जल आदि की शुद्धि का श्रेष्ठतम साधन है।

**आचार्य सोमदेव जी** ने अपने प्रवचन क्रम में ईश्वर, जीव, प्रकृति, धर्म, सदाचार, संस्कृति, चरित्र-निर्माण से सम्बन्धित अनेक विषयों पर प्रकाश डाला।

**अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।**
**धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति:।।**

मनु. १/१३२

मनु के इस श्लोक की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि अर्थ और काम में आसक्त व्यक्ति धर्म को प्राप्त नहीं कर सकता, धर्म का मर्म नहीं समझ सकता है। माननीय व्रतमुनि जी का दृष्टान्त सुनाते हुए आपने बताया कि मुनि जी अर्थशुचिता को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं, अर्थशुचिता को ध्यान में रखते हुए आपने अपना पूरा जीवन जीया है, न केवल स्वयं बल्कि अपने जानने वालों में भी अर्थशुचिता का उपदेश करते रहे हैं, जिनके प्रति अर्थशुचिता की दृष्टि से पूर्णत: आश्वस्त होते हैं उनके यहाँ से किसी प्रकार की भेंट स्वीकार करते हैं। एक बार जब आप (आचार्य सोमदेव जी) गुरुकुल खानपुर में अध्ययनरत थे तब मुनि जी वहाँ पधारे, ब्रह्मचारियों की सभा में आपने एक प्रश्न पूछा- दो किसान हैं, जिनके पास समान जमीन है, समान साधन है, लेकिन उनमें से एक किसान की सोच है कि इस बार मुझे अधिक मेहनत करके अधिक से अधिक लाभ कमाना है और उस लाभ से अपने सुख के साधनों को बढ़ाना है और दूसरा किसान विचार करता है कि मुझे इस बार अधिक से अधिक पुरुषार्थ करके इतना अनाज पैदा करना है कि मेरे देश के प्रत्येक व्यक्ति को अन्न मिल सकें, मेरे देश का कोई भी व्यक्ति रात को भूखा न सोए, तो दोनों किसानों में कौन सा अधिक धार्मिक होगा, इसका समाधान आता था कि निश्चित तौर पर दूसरा किसान अधिक धार्मिक होगा क्योंकि वह अर्थ में आसक्त नहीं वह राष्ट्र, देश की सोचता है और पहला किसान अर्थ के प्रति आसक्त है वह केवल पारिवारिक विषय में सोचता है। दोनों की मन:स्थिति में अन्तर आ गया, जब मन:स्थिति में अन्तर आ गया तो दोनों की धर्म की दूरी भी अलग-अलग हो गई। इसी प्रकार जो व्यक्ति काम में आसक्त होता है, वह भी धर्म से दूर रहता है। आनन्द नाम वाला व्यक्ति, महात्मा बुद्ध के पास उनका शिष्य बनने पहुँचा तो उसने एक शर्त रख दी। आचार्य जी ने बताया कि जब कोई शिष्य गुरु से पढ़ने जाता था तो गुरु शर्ते रखता था लेकिन यहाँ शिष्य गुरु के सामने शर्त रख रहा है और शर्त क्या है? शर्त यह है कि जब भी मेरे (आनन्द के) मन में कोई प्रश्न उत्पन्न होगा तो मैं तत्काल आपसे पूछूँगा और आपको उसी समय उसका समाधन देना होगा। बुद्ध ने शर्त स्वीकार कर ली और आनन्द उनका शिष्य बन गया। एक बार बुद्ध ने आनन्द को कुछ सामान लेने बाजार भेजा। आनन्द सामान के लिए बाजार में घूम रहा था। तो बाजार में एक जगह लोगों की भीड़ लगी हुई थी। आनन्द ने भीड़ में से एक व्यक्ति से पूछा- भाई! इतनी भीड़ क्यों है? व्यक्ति बोला- यहाँ कुश्ती होने वाली है। आनन्द फिर अपने कार्य निपटाने जाने लगा तो उस व्यक्ति ने आनन्द से पूछा- क्यों भाई! कुश्ती नहीं देखोगे? आनन्द ने उत्तर दिया- नहीं भाई, पहले ही बहुत कुश्तियाँ देख रखी है और देखने की इच्छा नहीं। व्यक्ति बोला- भाई ऐसी कुश्ती पहले नहीं देखी होगी, यहाँ आदमी और शेर की बीच कुश्ती होने वाली है। आनन्द के मन में आश्चर्य और जिज्ञासा हुई। सोचा, देखते हैं। कुश्ती शुरु हुई एक पहलवान और उसके सामने शेर। जैसे ही शेर झपटा, पहलवान चुश्ती/फुर्ती से ऐसा झुका कि शेर के पैर पकड़ लिए और ऐसा पछाड़ मारा कि शेर वहीं ढ़ेर हो गया। आनन्द को बड़ा आश्चर्य हुआ कि आदमी ने शेर मार दिया। इधर आश्रम में बुद्ध आनन्द की प्रतिक्षा कर रहे थे जैसे ही आनन्द को ध्यान आया कि गुरु जी ने शीघ्र आने को कहा था, झट सामान खरीदकर आश्रम पहुँचे। बुद्ध ने पूछा- आनन्द बड़ी देर लगा दी। आनन्द ने आश्चर्य पूर्वक सारी बात बता दी। बुद्ध गम्भीरता पूर्वक बोले- शेर को मारने में कोई आश्चर्य नहीं, शेर को मारने वाले तो बहुत से मनुष्य हैं, असली वीर तो वह है जो अपनी कामनाओं को मार दें। बुद्ध की इस बात को भर्तृहरि ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया है-

**मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा:,**
**केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षा:।**
**किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरत: प्रसह्य,**
**कंदर्पदर्पदलने विरला मनुष्या:।।**

तो जो कामनाओं में अनासक्त है वह धर्म के तत्त्व को समझ सकता है। यहाँ महर्षि मनु ने अर्थ में आसक्ति

thearyasamaj.org

(लोभ) और काम में आसक्ति (काम), दो अवगुण गिनाएँ हैं, क्योंकि व्यक्ति में जब ये दोनों आ जाते हैं तो इनके साथ और अवगुण जुड़ते जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने महर्षि मनु के मत को उद्‌धृत करते हुए सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में काम से उत्पन्न होने वाले १० अवगुण और क्रोध से होने वाले ८ अवगुण गिनाएँ हैं और लोभ को काम और क्रोध का भी मूल बताया है-

**दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।**
**व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्।।**

- मनु. ७/४५

**द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं सर्वे कवयो विदुः।**
**तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ।।**

- मनु. ७/४९

सायंकालीन सत्संग के क्रम में मेरठ से आए हुए श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय कराते रहें। इस समय तृतीय समुल्लास पर चर्चा चल रही है। ब्रह्मचर्यकाल में जीवन को संयमित-नियमित बनाये रखने के लिए यम-नियमों का पालन आवश्यक है। पतञ्जलि मुनिकृत योगदर्शन में उल्लिखित अष्टांग योग की ये प्रारम्भिक सीढ़ियाँ हैं।

यम पाँच प्रकार के होते हैं-

**तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।।**

- योगदर्शन २/३०

अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन, वचन, कर्म से चोरी त्याग, (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमान रहित होना। इन पाँच यमों का सदैव पालन करें।

नियम-

**शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।**

-योगदर्शन २/३२

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं, किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, लाभ-हानि में हर्ष या शोक न करना, (तपः) कष्ट सेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का करना (स्वाध्याय) पढ़ना-पढ़ाना (ईश्वर प्रणिधान) ईश्वर की भक्ति विशेष से आत्मा को अर्पित रखना- ये पाँच नियम हैं। यमों की उपेक्षा करके केवल नियमों का सेवन करने से काम चलने वाला नहीं है। जो यमों को छोड़कर केवल नियमों का ही पालन करता है, वह अधोगति को प्राप्त होता है विद्या-प्राप्ति के लक्ष्य से भटक जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा उद्‌धृत मनुस्मृति के वचनों की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट करते हुए श्री आर्य ने कहा कि वेदाध्ययन दैनिक आधार पर किया जाने वाला नित्यकर्म है। इसमें किसी प्रकार की छूट नहीं है-

**वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके।**
**नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि।।**
**नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम्।**
**ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्याय वषट्कृतम्।।**

वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने, सन्ध्योपासनादि पंचमहायज्ञों के करने और होम मन्त्रों में अनध्याय और निरोध अर्थात् अननुष्ठान (रुकावट) नहीं होती, **क्योंकि नित्यकर्म में अनध्याय नहीं होता।** जैसे श्वास-प्रश्वास सदा लिये जाते हैं, बन्द नहीं किये जाते, वैसे ही नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिए, किसी भी दिन छोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि अनध्याय में भी अग्निहोत्रादि उत्तम कर्म किया हुआ पुण्यरूप होता है। जैसे झूठ बोलने में सदा पाप और सत्य बोलने में सदा पुण्य होता है, वैसे ही बुरे कर्म करने में सदा अनध्याय और अच्छे कर्म करने में सदा स्वाध्याय ही होता है। विद्या प्राप्ति के लिए उपयुक्त मानसिक धरातल तैयार करने की दृष्टि से **श्रद्धा-स्वाध्याय-तप और मन वचन कर्म से ब्रह्मचर्यव्रत** की आवश्यकता अनिवार्य है। उपनिषदों में भी श्रद्धा-तप-ब्रह्मचर्य का 'त्रिक' पदे-पदे उपस्थित होता है। विद्याध्ययन इनके बिना पूर्ण नहीं होता। इति।।

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

thearyasamaj.org

# आर्यजगत् के समाचार

१. **प्रवेश सूचना**- वैदिक गुरुकुल विद्यापीठ, खेरली, जि. अलवर, राजस्थान पिछले चार वर्षों से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। गुरुकुल में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। यहाँ गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा शिक्षा बोर्ड भिवानी, हरियाणा द्वारा स्वीकृत और महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष प्रणाली से अध्ययन करवाया जाता है। गुरुकुल में प्रथमा (छठी) कक्षा से शास्त्री पर्यन्त अध्यापन की व्यवस्था है। इच्छुक व्यक्ति **सम्पर्क करें**- ०८५०४०९३८६३, ०९५४९५६०४२२

२. **प्रवेश प्रारम्भ**- आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर, भरतपुर, राजस्थान में महर्षि कृत आर्ष पाठ विधि तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित दोनों ही पाठ विधियाँ अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती हैं। कन्या गुरुकुल में भव्य छात्रावास, सुन्दर यज्ञशाला, विद्यालय भवन, अपना ट्यूबबैल, क्रीड़ा स्थल आदि की सुन्दर व्यवस्था है। ३१ मार्च २०१५ से कक्षा ४, ५ व ६ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। इस वर्ष केवल ३० छात्राओं को ही प्रवेश दिया जायेगा। अपनी सुपुत्री के उज्ज्वल भविष्य तथा सुसंस्कारों के लिये आप उसे कन्या गुरुकुल में प्रवेश करायें। **सम्पर्क सूत्र- कु. प्रियंका आर्या-०९६९४८९२७३५, कु. ख्याति शास्त्री सामवेदा-०८४४१०८७४०८**

३. **प्रवेश प्रारम्भ**- युग-जागृति वैदिक गुरुकुल, गुरुग्राम, गुड़गाँव, हरियाणा में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरुकुल संचालित है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा ३, ४ व ५ में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है। यह संस्थान पूर्णत: आवासीय है। संस्थान में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक विषयों का नवीन शैक्षिक तकनीकी के द्वारा गहनता से अध्ययन कराया जाता है। शिक्षण संस्थान परिवेश पूर्णत: वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम कोटि की है। समस्त अभिभावक बन्धु इसका लाभ उठाकर और अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारवान्, चरित्रवान् एवं राष्ट्रभक्त बनाकर परिवार, समाज तथा राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

प्रवेश हेतु आवेदन एवं विवरण पुस्तिका संस्थान कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस में १००/- भुगतान कर प्राप्त की जा सकती है। स्थान रिक्त रहने तक ही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है। **सम्पर्क सूत्र- ०९८१०५४५९५१, ०८७५०६१४५०१**

४. **वार्षिक महोत्सव सम्पन्न**- गुरुकुल हरिपुर जुनवानी, ओड़िशा के पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव ओड़िशा, छत्तीसगढ़, बंगाल, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों से आगन्तुक श्रद्धालु हजारों नर-नारियों की पावन उपस्थिति में ३० जनवरी से १ फरवरी २०१५ को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

५. **वार्षिक उत्सव सम्पन्न**- श्रुति विज्ञान आचार्य कुलम् (एक आदर्श वैदिक गुरुकुल) का नौवाँ वार्षिक उत्सव दि. १४ एवं १५ मार्च २०१५ को हर्षोल्लास से मनाया गया। इसमें अनेक वैदिक विद्वान् पधारे। विद्वानों के सत्संग के साथ ब्रह्मचारियों ने अनेकविध मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

## शोक समाचार

६. **महाशय श्री किशनलाल आर्य विद्यावाचस्पति** का निधन २ फरवरी २०१५ को हो गया। आपने प्राथमिक शिक्षा अपने ग्राम में ही प्राप्त की। विद्या विकास की सद्प्रवृति के परिणामस्वरूप आपने वैद्य विशारद, आयुर्वेद रत्न, सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि अनेक उपाधियाँ भी प्राप्त कीं। आपका अन्त्येष्टि संस्कार ग्राम ऊँचागाँव में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ, जिसमें विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

७. वैदिक विद्वान् **श्री वेद प्रकाश शास्त्री** का ९५ वर्ष की आयु में ३० जनवरी २०१५ को निधन हो गया। आप राज्य सेवा में रहे तथा साहित्य प्रेमी थे।

८. परोपकारिणी सभा में कार्यरत श्री कमलेश पुरोहित कम्प्यूटर ऑपरेटर के पिता **श्री श्याम किशोर पुरोहित** का देहावसान दिनांक ९ फरवरी २०१५ को हो गया। उनकी आयु ६८ वर्ष थी। वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। संस्कार में सभा के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

**परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**

---

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६**

thearyasamaj.org

# महर्षि के जीवन की झलकियाँ

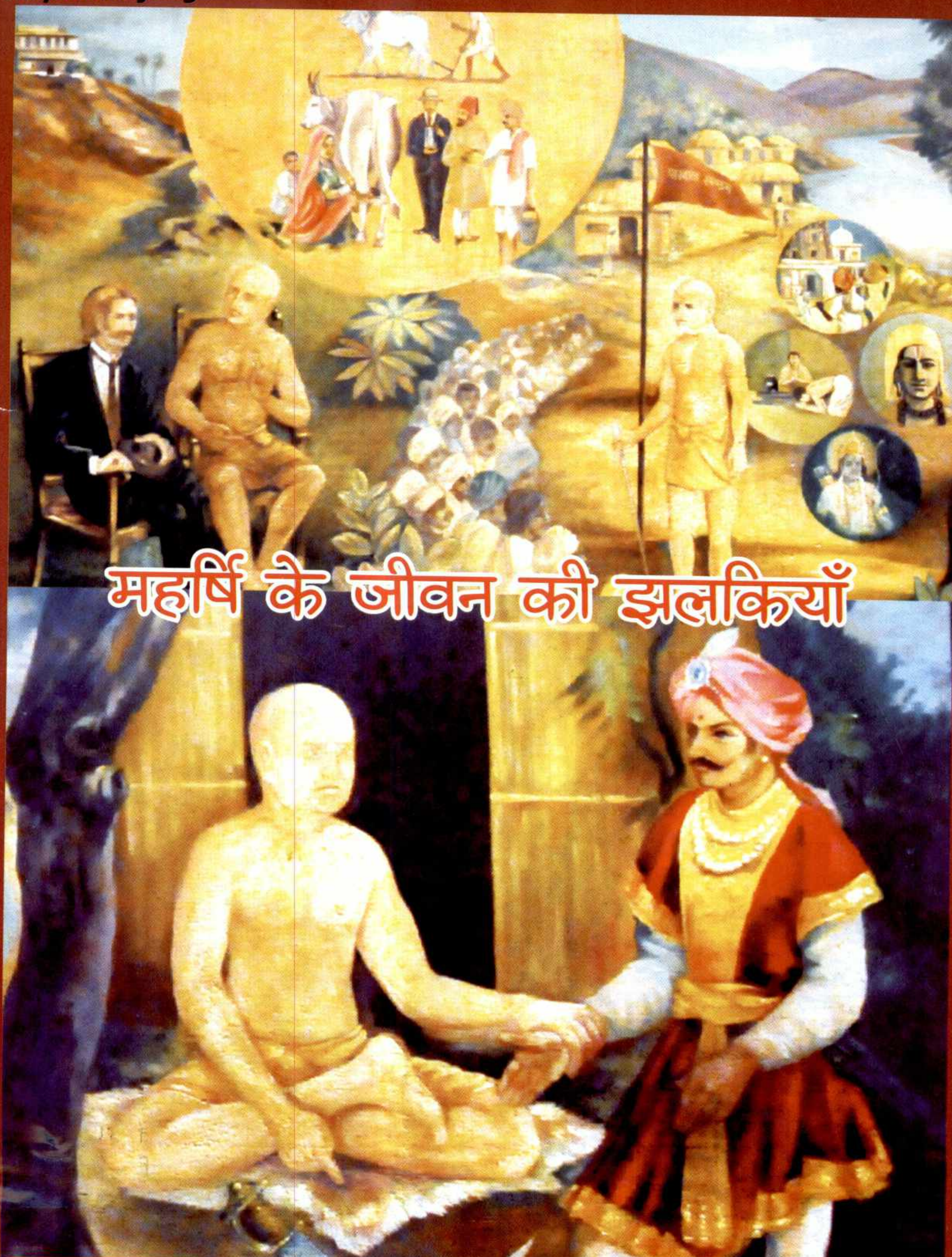

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ मार्च, २०१५ ३९५९/५९

पं. गुरुदत्त बलिदान दिवस (१९ मार्च)

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१